

मयाधरार **, सुर**स्त्रत

श्री सहजानन्दे शासिपाला न

## समस्थानसूत्रविपयदर्पग

लेखक --

भागांत्रिक सन्त, शांत्रमृति, न्यायतीर्थ, पूज्य श्री १०४ जुलक वर्षी मनोहर जी 'महजान'द महाराज

सम्बद्ध —

रतनलाल जैन एम० कॉम मेरठ सक्दर

मिल्य । ₃∞)

মহায়ক ~

भन्नी, श्री सहजानन्द शास्त्रमाला विकस्त २०११) योर निर्याण सुरू २४८० [के १६४४

प्रथम संस्करण

इस पुस्तक की १० प्रांत खरीदने पर १ प्रांत विना मृह्य

## श्री'सहजानन्द शास्त्रमाला के प्रवर्तनी

### ज्ञुभ 'नामावलि १ ७ श्रीमान ला० महापारप्रमाद की बैन विकस सरर मेर १००१)

२ 🛊 श्रीम निरसेन नाहर्रावह बी बेन मुबस्पर नगर	1007)
३ 🛊 श्रीक प्रेमच द श्रोमप्रकारा जी जैन प्रमपुरी मेरट	<b>toot</b> )
v # श्रीः सनेपाद लानच बाबी मु•पदस्तगर	११०१)
<ul> <li>भ्री । सेठ शीनलगर ना बैन सदर मेग्ठ</li> </ul>	15005
६ 🛊 श्रीत वृध्याचन्द जी देत गर्स दहारादृत	( eas)
७ क तीत दारबंद जी जैन रईस देहरारून	(\$26\$)
r a शील व समन प्रत्यत वी वैन रईन मस्पी	72021
६ ७ श्रात्र सर्गम मुरा । नान श्री बैन प्यानापुर	\$502}

१० थीत भगनराम उप्रभैन वी बैन बगावरी

११ औः जिनस्परहाल भीषान वो देन ।शमला १२ श्रीक बाजारीकाल ानरंबन १२ वा देन शामला \$0 2) १३ ७ श्रीत सेठेदानानसादम्बसाची बैन सनाद 8001) १४ भीत बापुराम ग्रावलंबप्रमाद नी बैन २६५ तिस्ता 82483 १५ \* थीत मूर्व दलाल गुलरानसय बी ब्लाना मन

2002)

2-011

मुबग्धरनगर १००१ श्रीक लाव मुखरीर्रासह इमचद जी वैन सराप्त बढ़ीत १००१) १७ \* श्री० सेर मोहनलाल ताराचंद जो वह । ना व्यपर १००८

१८ औ॰ मंदीलाल बी फोडरमा

१६ श्री व देलाश्चिद वी देहरादुन 20021

🗱 इस ।च इ याने स जर्मा का पूरा रुपया का साथ में उसा है।

# समस्थानसूत्रावेपयदर्पगा

### मगलाचरसम्

सहजानन्द्रसम्पन्नमः नत्या शित्रम् समम्।

समस्थानगमृत्राणाः न्यस्यन्ते	निषया	त्रमे ॥१॥
कि श्रद्धं तका नर्शन		थप्याय-मृत्र
ा अक्षतमा नस्त		2-9

मधेके श्रद्ध तका वर्णन उसमा हेतु १-२

डितीय हेतु मग्रहदृष्टिसे वर्शन

**१-3** 

2-5 उमना हेत्

8-4 नेगमदृष्टिमे वरान १-६

उमका हेतु १७ १-=

परमभावसे वर्गान

उसना हेत्

8-8

उम हेतुसे निर्णय ₹-१0

१-१२

१-१३

2-58

हेतुपूर्वक समर्थन

2-22

इम निर्णीत स्रास्थाती प्रशक्यता

उमका हतु

परिभाषसका कल

	1 - 1
स्यवहारमे मेदप्रस्पना	7 7 9
उसके प्रयोजन	9.95
प्रयोग्नीस म्पर्शस्य	₹- <b>१</b> ७
धर्मध्यानरा प्रयोजन	7-75
मत्यममृद्धि	3-16
उगरा श्रीभवरास्य	7 25
दिनीय श्रम्याप	
भरिनितर हेन्ममान	2-334
श्रानिसायिक	2.985
योग्नराधिर	२ १६३
अपानिया दर्भ	2-120
व्यजन्यतानुव्यापारक मात्रमपुर विकन्य	2-301
श्चनी रहस्य	₹-₹1€
श्रतिक्रायव्यन्तरेन्द्रकी वन्त्रभिश	\$.000
श्चतिकायकी गणिजामहत्तर।	2 2 50
यह तस्वर परे राणडम विशन्प	៖ នូវន
<b>य</b> ण्यामान	2.053
<b>य</b> ध्ययमान	3.558
धन्यथानुषपद्यमानन्यागमरी ममारना	२ ४२४
भन्यभानुषपद्यमानन्यागमरा प्रमागान्नरम्	
पर मण्डर निरन्प	נכל כ

#### [ ३ ]

धनरान	२-३६७
श्चनवरात्मर शुतज्ञान '	<b>⋾-</b> १⋵०
<b>थनादिमम्बद्धरारीर</b>	२-१५०
श्चनिष्टत्ति हररा गुर्खस्थान दती	२-⊏६
श्रनुपलव्यि हेतु	२-३५२
थनुपस्था <b>न</b>	ৼ-१७४
श्रनुमानमो श्रप्रमाणमाननेपर ख०वि०	२ ४२२
थनुमान	२ ११४
श्चनुमानको गौखताके हेतु श्रत्रमाव मानने पर ६०	२-४२१
<b>अनुमाना</b> ङ्ग	र १७३
श्रनुम्नान	२ १७४
धर्ने रान्तिर हेररामाम	२४०७
श्रव्रत्यारयान	<b>३ २</b> ⊏२
श्रप्रतिज्ञ मण	२ २⊏१
ध्रप्रतियानगरीर	२-१४६
श्रप्रमत्त	<b>⇒</b> = १
<b>अप्र</b> शस्तिदान	२-१७६
श्रपयीप्त नारक	৯ ৪७২
श्चपूर्व करण गुणस्थान गतां	२=४
श्रपूर्वररण प्रथम भागरथ व्युन्डिति	२ २६२
व्यमापारमक शन्द	२ १७६

1	я )
द्यभियट दोप	२-१=४
अभेदनदासिद्धिके कारण पर निकल्प	२-३८८
चयन	३६६ व
व्यर्थीपित्रेरी प्रमाणान्तर माननेपर खटक	२ ४२३
श्रथञ्जप्ति से अम्बमिबिद्वतान मिडि मानने पर छ०	३१४ €
यर्थ	२-३१६
<b>अरतिद्वि</b> र	38€ €
यव्योगाढोत्तर प्रकृति २घ	৯ ৪৪≍
<b>भ्</b> तप्रह	<b>२-१११</b>
थ्यत्रधिमान	<b>-</b> 85
थ्यवधिनाम	<b>2-</b> ₹⊘
अतिचार भक्त प्रत्याख्यान	236-6
श्रविनामार	३-३४१
अभिरति	२११०
थ्यश्चचित् <b>न</b>	<b>ગ-११</b> ⊏
श्रश्चद्वोपयोग	२ १०३
श्रश्चममनोयोग	03G-G
ग्रस्मटादिके झानजो ज्ञानातरचद्यमाननेपर ए०	२ ४३३
प्रमद्भ् <sup>तव्यप्रहार</sup>	<b>≥-</b> ₹७=
यसिद्धहेत्रामाम	२-३६ ५
श्रमनिपञ्चेन्द्रियजीयसभाम	२-८५७

[ k ]		
श्रहिंमा		846
यवीग् <i>न हि</i>	. ~ 5	13-68
<b>अज्ञान</b> चेतना	1,	′}}-३=०
याराग	-494	ક્રિક
त्रातमा व नानक अप्रतीयमान मानक	H ft°, 1387	्री २३६
<b>ब्राद्यद्वीपसमुद्राधी</b> ग	- 1-191	्री २३७
म्रादिमत्परिगाम	e fo	्र ११७
श्चाम्यन्तरहेतु	190	-११≂
ग्रापु	ć)	ેર-ષ્ટદ
<b>या</b> र्य	180	३४६
याश्रर _	. 53	४७
यात्रगानिकरण -	311.	٦Ę
<b>याहार</b> के द्विङ्	250	۰
याहार क्रमागंख	२ १५१	7
इन्द्रिय	7:23	
इन्द्रियर्चिकी प्रभाणतापर सिन	२-३७ <sup>०</sup>	3.
इथरम नियनानद्वय माननेवर ह	5 d28	. 1
ईश्वरका वह द्वितीयज्ञान मानता <sub>है</sub>	2-82	ž.
उत्कृष्ट ग्रायुगमान	2 **	- A
उत्कृष्ट थापक		

	{ * '
उत्तरप्रकृतिर्वेच	2 389
	<b>⋼</b> ३६
उद्दिष्टन्यामी श्रामक	<b>३ १४३</b>
उदय	5-584
उद्यप्रभृति	-
उपचरितस्यभाव	2250
उपनयाभाग	2 <i>પ્ર</i> વૃદ્ધ
उपयोग	<b>ə</b> &
<b>उपल</b> िथहेत	⇒ ३५३
उपशम	2 ईर्र
उपराममम्प्रकृत्व	⊋ == ₹
उपशमश्रे वियोगी	5 భ8
उपरान्तमोरम उदयञ्जन्त्रित	२ २६३
भरत्रिपुतमतिम निशेषर	२ ३३७
न्म <u>स्</u> युक्त	३ २८६
ए <b>र दिशिक्षममुद्धा</b> न	<b>३ ३</b> ६४
<i>प स</i> न्त	२ १३०
एस्ट्रणामिन्द	२ १≂४
एनापलस्मा सम्बद्ध विस्न	<i>३ ४</i> १ १ ३
અહિદ્ધા <u>ગ</u>	<sub>.</sub> च इंद्
यादारिकडिक	3 8 =
- व्योदारिकाययोग	ล-84 ₀

[ 9 ]	
श्रोदारिकमिश्रप्राययोगी	२ ४५१
श्चीपशमिकभाव	≎-ఓ గ
किया	२ ३८०
किया ऋदि	२-२६४
क्द्रनक्पातालपार्थ नर्नापर्वत	२ २३६
क्ट्वरपातालवाश्व पत्रत निरामी दर	२ २३७
वर्मे	२ ११७
<b>र्म</b>	२ ११=
<b>क</b> र्म	२-४६
र्म	२-३४६
कर्म	२ ३४७
कर्मभृमिजनर	२-६६
करणकृति	२ ३६०
<b>क</b> ल्पारा	२ १३६
<b>गम्</b>	2-330
क्मीणगाययोगी	∌-8A8 <sup>~</sup>
कर्माणशरीरको म्लक्रस्यकृति	२ ३६ २
वायत्याम	335 5
नारक	२ ३१०
कारम	15 85°
काल े	

D 3 ~

ř	1 = 1
रालभृतेन्द्ररी गणिरामहत्तरी	२-२२६
यालमुतेन्द्र भी जन्सभिमा	2-290
कालाउँ धिममुद्रके अपीशदेव	<b>२ २</b> ४४
क्रिपुरपच्यन्तरन्द्रजी गणिजामहत्तरी	२-२१३
क्रिपुरप यन्तरेन्द्रकी बल्लभिक्रा	३-१६६
किनार पन्नरेन्द्रशी गणिशामहत्तरी	<b>७-२१</b> ३
कित्राच्यन्तरेन्द्रशे वन्त्रभिष्ठ ।	₽- <i>१६७</i>
<b>रुमति</b> नान	≎ ८४४४
रुअ् तनानी	२-४५६
केत्रली	ร-ก่อสั
ग्ध	၁ १၁५
गीतरतिगन्धर्वेन्द्ररी गणिरामहत्तरी	२-२१⊏
गीतरतिगन्य रेन्द्रमी बल्लभिमा	२ २०२
गीतयशगन्धर्यन्द्रशी प्रशिक्तामहत्तरी	2-288
गीनयशगन्धर्वेन्द्र की यञ्जभिका	₹-₹~3
गुण	ગ_રૂ ૦
गुणपर्याय	२-१⊏६
गोत	ર-૭૫
<b>घृत</b> गरद्वीपाधीश	3}}-
<b>घृत</b> ररमसुद्राघीण	र∹२५२
<sub>पा</sub> तियारमी	398-6

[ [ ]	
चतुरिन्द्रियजीगसमास	<b>२-१५</b> ८
चारित	२-२७
चारित	₹-१८€
चारितार्ग	२-२२६
चेतना	<b>२-१२</b> ⊏
चौधे नरकम सम्यव्दष्टि	२ ४६६
<b>छट नरकम सम्यग्द</b> ष्टि	२-४६८
छाया	२-३२१
जगतके शब्दमयत्वके कारखपर वि०	<b>२-३</b> ≈७
जघन्यभोगभृमि	२-२३१
जडप्रतिभासायोगके युडक्रिक्न	२-४१३
जडताके ही प्रतिभास माननेपर निक <b>ल्प</b>	२४३⊏
जन्य श्वक्रियात्मकज्ञातृच्यापारपर विवन्प	२-३ <i>७७</i>
जलमायिक	<b>२-१</b> ४४
जलकायिक	२ १६२
जिन	२-४२०
जिनिम्ब	२ ४०२
जीप	२३
जीतपरिणति	२ ६६
जी <b>नसमा</b> स	२-२७१
<b>ची</b> रम्मास	- ३-३७२_

	[· to 1
जीगानीग्रबध	२-३१६
स्याग	२-१४१
<b>जीन्द्रियजी</b> यसमाम	२ १५३
तद्व यतिरिक्त नोश्रागमद्रव्य	२-२६०
तप	२ १३=
तिर्पेग्द्रिक	२-१०६
वर्तायनरकमे सम्यग्दष्टि	२ ४६५
तेजमहिक	२-१००
तेजसशरीरकीमृल रस्य कृति	₹-₹&&
द्रव्यकृति	3≂\$-⊂
द्रव्यजिन	२-इह४
द्रव्यनैगम	ર-૪૪ર
द्रव्यपरिवर्तन	२ ह ०
द्रऱ्यनिद्येषरूप∓र्भ	२ २५६
द्रव्यममान	२ ४७४
द्रव्यार्थिक्नप	⇒ ६७
द्वयचरमञ	२ ३५५
"	२-३५६
"	२ ३४७
**	२-३५⊏
दिनीयनगर्ने गम्यग्रिष्ट	२ ५६४

[ 18 ]	
द्वीन्द्रिय जीवसमास	२-१५२`
दर्शन	<b>ગ-</b> १⊏
दर्शनगत्तमरच	335 8
दशनावरखोदयम्थान	२-२६६
दर्शनमोहरीमर्रधाती त्रकृति	२-१७२
<b>दु</b> स	२-३३२
दृष्टान्त	२-११२
देव	२-१३४
<b>बन</b> िक्	<b>2-</b> ₹0⊏
देवगतिके वेद	≈-१६६
देवजीवसमाम	२-१५६
ध्याता	२-३१४
धावशीखडके द्यवीश देव	२-२४३
नन्दीश्वरद्वीपाधीश देव	२-२५५
नन्दीश्वरसम्रद्राधीश देव	२-२५६
नमस्त्रार	२-४३
नमस्कार	३-१७१
<b>नय</b>	२-२७
न्य	२-२⊏
नरकद्विष	२-१०५
नारकत्रीयसमास	

			ľ	१२ ]
निग्रहस्थान		- 1	1	<b>२-</b> ४०५
निगोद				2-02
निगोद				२-१४=
निमोद			~	२ १६५
नित्यनिगोद	1	1		२-७३
नित्यनिगोद				≎-७8
निदान				२ १२२
निर्जरा				อ-กิ o
निर्देश				२-३६०
निर्माण				२-११४
निर्वर्तना				<b>२-</b> ६ ३
निथयनय				२ ६ ५
<b>निश्चयनय</b>				२-६६
<b>नैगमनय</b>				२-३३⊏
नैगमनय		,		२-४७४
प्रतिभास्य		_		३-४०६
प्रतिरूपिशाचेन्द्रकी गरि	[मामहत्त	री		२ २२५
प्रतिरूपिराचिन्द्रकी बल्ल	भिका			२-३०६
, त्रत्याग्न्यान				⇒ ८४
¹ प्रत्यच				, ==
•		۸.		် ၁ ७ १

1 13 ]	
प्रतिष्टर	E086
व्रमचिवरतम व्याथनव्यु ित्रति	5-560
प्रमाण	<b>≎</b> -9
प्रमाण	3 35 3
प्रमाख	२ ३२८
प्रमाण्के फल	ა-გგგ
प्रमेयडित्वसे प्रमाणडित्नके ज्ञानम निरुल्प	८ ४७७
प्रायोगिक तथ	२ ३१=
पञ्चेन्द्रिय	<b>૨-</b> પ્
प्रमा <b>ख</b> ितपय	5-383
पदभग	२ २६६
पदार्थ	२ २
पर्याय	२-३१
पर्यापार्थिमनय	₹-\$=
परमाणुत्रोके वधके त्रारण	D-334
परमात्मभननाथापामना	- 5333
परमाधिक प्रत्यच	ું કેન્ફ
परमात्मा	= 37
परिग्रह	5-93E
परिखाम	\$ 25.0
परिमाख	* +£

	F	१४ }
परिहारिशुद्धिमयत		२ ४७१
परोचप्रमाण		2-66
परोधफल		२ ३०५
पोचवे नरवमे सम्यग्दृष्टि		२ ४६७
पातालपानालपार्श्ववर्ती पर्वत		२०३⊏
पातालपातालपार्श्वपर्वतिन्यामीदेव		3,5 0-0
पाप		∍-૪૬
पापाश्रवहार		२ २६६
पुद्गल		२ ३३
पुराय		२-४७
पुराय		⇒ १२१
पुरुवाश्रवद्वार		5 2E A
पुष्कराङ्क्ष्मानुषोत्तराधीश देव		२ ५४४
्र पुष्यराद्धोत्तराधीश देव		२-२४६
पूर्णुमद्र यच्चेन्द्रकी गणिशामहत्तरी		२-२२१
पूर्णभद्र यत्तेन्द्रकी बन्लभिना		2 20 4
पृथ्वीकाषिक		२-१६१
<i>ष्ट्रवी</i> रायिक		२-१४४
प्ल		२ ३०३
<b>फ</b> ल		२-३०४
फलाभास		≎ ૪∘૪

[ خ م] أ	
यखनामुखपार्भ वती पर्वत	၁၁३४
वडरामुखापार्थ पर्ववत्रामी दर	<b>२-</b> २३५
े बन्ध	ર-8=
मन्य	5-6 <i>≦</i> ⊏
बादरएकन्द्रिय जीरममाम	२ १५५
षारुणीडीपाधीश दन	9-2 <i>60</i>
वारुखीममुद्राघीश दत्र	२-२४⊏
वालप्रयोगाभाम	5-584
वालत्रयोगामास	२४०⊏
<u>बाह्यहेत</u>	२-३२४
वैस्रसिक्रान्थ	२-३१७
<b>ት</b> 紧	२-२६⊏
भयद्विर	२-३५०
मात्र .	२ ३२⊏
मात्रनिचेषरूषशर्म	२-२६१
भागप्राण	२-१४२
भाषा मक शब्द	२-१७≍
भीमेन्द्रगखिरामहत्त्ररी	२-२२२
मीमराचसेन्द्रकी बल्लिमिका	२-२०६
भूतसे चैवन्यक्री उत्पत्ति माननेपर नि०	२ ४४१
भि	≥ 33

F	52	1
भृयोदर्शन्मेथायथादुवपद्यमानत्त्रदाश्रवगमवरं गः	g-c, 3	<b>5</b> €
भोगभृमि ;	२-१	
्र भोगभृमिजवेड	5-5	६७
भोगभ्रमिनतिर्यः व	5-8	(35
म्लेरद	<b>5</b> \$	\$ 3 1
, मङ्गल ,	უ :	<b>₹०</b> १
मङ्गर्	5.	१०२
<ul> <li>मिश्यभद्रयत्तेन्द्रशी गिश्वशामहन्ती</li> </ul>	٥:	ζÞο
मिन्नमद्रयत्तेन्द्रशी वन्त्तभिशा	٦:	80%
<ul> <li>महाप्रालयत्तेन्द्रभी गिश्चिमामहत्त्तरी</li> </ul>	ą_:	o¢ş
<ul> <li>महाप्रालयचेन्द्रभी वन्सभिप्रा</li> </ul>	5-5	१११
महाकाय उरगेन्द्र की गणित्रामदत्तरी	2 :	१६
महाप्ताय उरगेन्द्र ती वन्त्तभिता	ə:	१००
मतिनान	5	-१५
मध्यमभोगभृमि	5-5	१३०
मन ू	3	-4€
- मन'पर्ययज्ञान -	२	-१३
मनुष्पद्विक	₹-	१०७
महापुरप कि पुरुपेन्द्रवी गणिशामहत्तरी		११५
' महापुरप कि पुरुषे द्वनी बल्लमिता	₹ :	339
' महाभीमरावसेन्त्रकी गणिकामहत्तरी	5.	, 2 £

[ 10 ]	
" " बद्धस्तिः	£ 200
मानगिर दिनय	3-80 \$
मितरानकायत्या <b>य</b>	२४००
मिया गरिव	२ २३
विध्यारर्शन	₹-₹
मिध्यादृष्टि	30.5
n	\$-E0
मिश्यात्राव	<b>&gt;</b> 45
<b>ग्र</b> नि	<b>₹.</b> १३¥
मोदनीयकर्म	₹ 33
मोदनीपदिशोरपस्यानप्रदेवि	ર વ્હા
मोहनीयद्विरव्धम्यानप्रहित	÷.303
माहनीयदियोग्यस्यानप्रहाति	4 20A
1) 1)	356.0
मोहर्नापदिरगणस्थानवद्दति	3066
मोष	2 2 y s
मीयमार्ग	3.04
युग्गराशि	2362
युपरेगरपातालपार्श्वरातवामी देव	* *05.5
योग ,	2 42
	₹ <b>१</b> 2 -
	1,10

	[ १= ]
योगजधर्मानुग्रहकॅ सदक निक्न्य 🕝	२-३७१
रत्नत्रय	२ ३२६
राशि	२-३६१
ल <u>ि</u> धित्रत्ययतैजसशरीर	२-१०१
लच्य	3 <b>7-</b> 78
लान्तपुकार्षिष्टे न्द्रकवि <b>मान</b>	२-३२⊏
व्यञ्जनपर्या <b>य</b>	२-१८७
व्यवहार	२-३३१
र्थयदारन्य	P-₹⊏0
·π	२-२⊏⊏
व्यवहार्ध्रमें	२-३४.
<b>व्या</b> प्ति <u></u>	२ ११३
<b>थ्युत्सर्गे</b>	२ १३७
17	२-३६⊏
<b>ञ</b> त	२-ृह प्र
यचन _	२ ५७
वचनप्रयोग	२-१६४
वचनम्स्त्रारहेतु	२ १६३
वनस्पति	२ ७०
वरुणद्वीपार्घाण	२ २५७
बरुणसमुद्रा शिश	२ २५⊏

[	
<b>वाग्गुप्ति</b>	२-३ह६
<b>पायुकायिक</b>	5-680
37	२-१६४
निक्र्नप	२-३६५
विरुल्पकेदारा श्रायिकल्पके श्रामिमपहीनेपर वि०	२-३⊏२
" " गमितरचपहेतुपर वि	, ၁ 3 ದ 3
विम्लप्रत्यच	२-१०
विकिया	<b>२-१७</b> ०
विप्रतिपत्ति	२-४०६
रि <b>र्भग</b> ज्ञानी	च-४४७
,,	อ-8ส≃
,,	348-5
11	∍-8€∘
**	२ ५६१
"	२ ४६२
,,	२-४६३
निरोध	२-३७६
निशेष	२-३४५
निष्य	२-१२६
<b>बिहायोगति</b>	₹-१₽३

२-१२३

ī	20	7
वेदनीय	57	७६
वेंदनानशार्तमराण	२३	00
वैक्रियक्रद्विक	D-4	33
र्विवयकसाययोगी	<b>3-8</b>	ήD
र्वेक्रियकमिश्रकाययोगी	२ ४	¥₹
वैमानिक -	5-6	૭=
<b>য়</b> ক	<b>२-</b> १	છહ
गरीस	२-१	
गुरीर रहित श्रात्मार्क श्रप्रविभासके इठपर २३०	२४	20
शरीरदेशमेषृथग्देशमें स्थितयातमा केयप्रतिमासपर	पं∘२४	20
शुतज्ञान	<b>ə</b> -	१४
"	ર-	98
11	२ ३	مت
n	₹-3	3 2
शुत्रोत्रवर्ती	२	-၁೯
श्रेषि	2	⊏३
श्ऱ्यगदके सण्डकवित्रन्य	२-१	११५
स्थापना	२-	१२७
स्यापनाजिन	₹ 3	εş
स्थितिय व	. 5	
स्तर	7-3	80

[ 38 ]	
मक्रमण	२-३६६
सचा -	२-१३ १
सत्प्रस्य किंपुरुपेन्द्रशी गणिशामहत्तरी	२-२१४
सःपुरपितपुरुपेन्द्रशी बन्लभिरा	२१६⊏
मङ्कृतन्याहार	२-२७६
सङ्ग्र पगहार	2-5=0
मभिर्रेपपोग्पताके संडर निकल्प	ə-3 <i>६७</i>
मित्रर्पशक्ति के संवडर निरन्त	२-३६≕
मिनर्र्गमहरारी द्रव्यक खएडक वित्रन्प	२ ३६८
सम्बद्धांगहरारी कर्मक खल्टर विरुप	5-390
मम्यक्चारित	5-63
सम्यर्भ्शन	२-४१
सम्यग्दर्शन	२ ==
सम्यग्दर्शन	3≈ €
सम्यग् <b>तान</b>	२ ४२
सम्यग्दष्टि मुख्यशक्ति	Sacia
समय	,२३०७
समाधिमरण	२ २६२
मयोगिसमुद्धातगतप्राण 🔑	२-१६८
मर्जूगतमामान्यके खड्क वि०	2-388
मर्रेपद ्	, २२७०

.

	[ 25 ]
मम्बेपना	२-१३६
स्रिविज्य श्राविकत्यक एक व्यव विकरण	२-३⊏१
मनिकन्प श्रनिजनपके एउन्वपर निजनप	२-३ँ≈२
सनिवन्त श्रमिक्तपकेणक्त्रको साद्य्यहेतुर	र " २-३⊏३
सरान्यमरग	2-5 6
महभार	၁-၃ ႘၁
सबम्बन्नार	<b>२ २६४</b>
सख्या	२ ३१०
सब्रहनय	2-256
मंयोग	२-६३
मरर	ુ કેશ
सयतासयत विर्यञ्चमम्यग्दर्षः	ə ৪ <i>७</i> ०
संस्थार	२-३३४
संस्थान	२-३११
संस्थान	२ ३२०
संमारी जीव	<b>ર-</b> જ
संजिपन्चेन्द्रियजीनसमाम	२-१५⊏
साकारनानवादियोंके जडप्रतिभागमे विकन्प	२-४३६
माशारवासे ही नियवार्थशोधमाननेपर विश्रन्य	
साकारतासे ही नियतार्थवीधमाननेपर जिवन	a 5-88°
मातर्वे नरकम मम्यग्दष्टि	338 €

[ 73 ]	
सामर्थ्य	२-१⊏२
सामान्य	२ ३४४
सामायिक ^	<b>ગ-</b> ય્ર
मान्यप्रहारिकप्रत्यत्त	-२ ४४६
सामादन सम्यग्दष्टि	३ ४७३
सीतोमयतदस्थयमङ्गिरि	<b>२-</b> २३२
सीतोदोमयतढस्थयमक्गिरि	२ २३३
सुरूपेन्द्रगणि रामहत्तरी	२-२२४
सुरूपन्द्रवन्तभिशः ,	२ २०¤
ध्रममाम्पराय	ર≂૭
<b>स</b> च्मेकेन्द्रियजीवसमाम	348-6
हास्पद्धिक	२-३४⊏
हिंसा	२-३६७
हेत	388-6
हेत	२-३५१
<b>चीरद्वीपाची</b> ण	385-6
चीरसमुहाधीश्च	२-२५०
चुद्धक	
<del>पे</del> नमदि	२-३⊏
चेत्र परिवर्तन	२ १६२
च।द्रडीपात्रोग	83-6
	≀ર-૨૫ <u>ર</u>

ſ	રક	1
चौद्रसम्रद्रावीश	<b>२-</b> 25	18
ज्ञातुच्यापारपर निश्लप	२-३	dE.
ज्ञातच्यापारची प्रमाणतावर निप्रन्य	२-३।	<b>ડ</b> ર
ज्ञातृच्यापारकी व्यनन्यतापर निमन्य	5-3	งช
ज्ञातुच्यापारकी जन्यतापर निमन्प	Þ.3,	હદ્દ
ज्ञा <b>न</b>	5-1	ŝ
र्ज्ञानके शब्दानुविद्धत्वप्रतिभाम प्र विरूप 🔻	२-३≀	=8
ज्ञानकेशन्द्रानुविद्धस्यप्रतिभासमेप्रस्यचहेतुपरविक्रन्प		
ानकशब्दा <b>नुनिरुद्धप्रतिभासस्वरूपके</b> रपडक्रविकल्प	'२ ३ः	ΞĘ
ज्ञानको भूतपरिगाम मानने पर राडक जिक्टप	२ ४	१६
ज्ञानको साकार माननेपर घडक विकल्प	<b>ર-</b> જ	၇ဖ
ज्ञानको <b>यस्त्रसविदित माननेपर ए</b> डक विकल्प	₹-81	१⊏
नानका स्वयमक्रियात्रिरोध माननेपर राडक् तिकल्प	२४३	३१
ज्ञानकी क्रियाविरोधम राडक श्रपत्तार्थे	२-४	३२
ज्ञानवेदश्ज्ञानान्तरके संटक विश्व <b>य</b>	२४३	३४
ज्ञानान्तरको प्रत्यच माननेपर खटक विकल्प 🤚	ર-૪	₹४
ज्ञानान्तरसे जडता प्रतिभासपर विकल्प 💎 🕐	ર છે	રૂહ
नतीय घ्रध्याय		
श्रद्गोपाङ्ग	3-:	₹ξ
सवर्षद्रत्यक निर्णे। गुण	३-१	१७
भ्र गेर्प्रैवेयक	₹ 8	3

T = 2 1	
च्यन्तरात्मा -	३३
श्चन्य <u>र</u> ्धान्तामास	<i>ষ-</i> ৩२
अन्जुगामी अप्रधिज्ञान	₹-100
श्चनत	३ १३
श्चन तानत	3
ञ्जुगामोश्चवधिद्या <b>न</b>	<b>3</b> -48
ब्रजुपल <b>ि</b> थहेतु	३ ७१
श्रतुमारी ऋ <b>दि</b>	३ ह १
<b>अप्रमत्तविरत</b>	₹-२४६
च्यपर्याप्ते केन्द्रियप्राख	ま-おふ
श्रपर्याप्त तिर्यञ्च	₹-२३≈
श्रपर्याप्त मनुप्य	३ २३६
व्यपर्याप्त देव	३ २४०
अर्थुकी अभिधानातुपक्तताके स्वरूपके खंड	क्रवेकल्प३ १⊏२
श्चर्यपर्यायनेगम	३-२२६
श्चर्य्व्यञ्जनपय[वनैगम	३-२३०
भर्धन्य	३ ६३
भर्यामेदकारणके संडकविकन्प	३ १=४
व्यर्याघिकार	३ २३९
यनपुरहत	३१७२
थर्विद्यान	3,253

	ſ	२६ ]
श्रापिकल्पाध्यद्यातमीयैकत्वस्त्ररूपस्टकपिकल्प		३-१⊏३
श्रविचार भक्त प्रत्योग्यान		३-१३२
श्रशुभरचनयोग		३१३१
श्चशुभत्तेस्या		३-५७
श्रमद्भृत पाहार		३-१२५
धसस्यात '		<b>३-१</b> २
श्रसख्यातामरयात		३-१६
थ्यस्यत सम्यग्दिष्टितिर्यञ्च		३-२४२
<b>प्रस्</b> यत सम्यग्दष्टि मनुष्य		३ २४३
<b>यद्र</b>		३-६०
थारारयोनि		34-2
व्याकाशद्रव्यके निशेषगुख		३-११=
थागमामाम		३ २१४
<b>था</b> त्मा		ষ্-হ
<b>यानुपू</b> र्भ		३ ७६
श्राह्वनीय कुएड		३ ७७
थाहार <b>४शरीरकीमूल</b> करणकृति		₹-8€0
इन्द्रपश्पिद्		३- <b>१</b> ४३-
उदयत्रिमङ्गी		<sup></sup> ३-७≈
<b>उपचरितामदुभूतव्य</b> प्रहारनय		३ १०६
उपनय		३ १२३

<b>િ ૨૭</b> }	
उपमोग	₹-१२१
उपयोग	३-१६६
उपरिमितिकल्प	३-१७३
<b>उर्ध्ये</b> प्रैवेयक	≀ ३ दे≅
माजुमतिमन पर्यय ,	₹-१४०
ण्यारिमङ्ग	₹-₹७
एरेक्ट्रन्य	ચ-ર∈
थादारिक्यारीरती म्लररणहति	३-१⊏⊏
क्रम्भावनियमाविनामा-	₹-१४६
वर्ता	₹-१३६
कर्म	3-88
क्मिर्य	3 830
ररण	<b>३-१</b> ५३
<b>रायगु</b> प्ति	3-20⊏
राल	
रालद्रव्यके तिशेषगुण	3 8 8 8
इनान	399-5
ये नलज्ञानी	<b>३-१६२</b> ३ २००
क् <sup>चे</sup> वलदर्शनी	3 780
प्रैवेयर	३२४≈
ग्यन∓ति	₹६¥
	~ <del>?</del>

	ſ	२८	]
ममॅंब		3 8	Œ
गारव		' ₹-¤	٤;
गुप्ति		३-१५	Ę
चरित्राराधना		ą	ξ
चित्राह्र तसाधकाशस्यविकेचनस्वहेतुके विकन्प		३-२	१६
चेतना		३-१ः	२०
छवस्य प्रमास्पराः परम्पराफलः		३ २	38
<b>ब</b> जस्थपरमेष्टी		३-११	Ęε
छल		३-२	१३
जवन्य श्रायु समान		₹-२	ÁЗ
अन्म		₹-	४७
जप		३२	११
बलचरजी <b>गश्रवेभ्</b> तसमुद्र		ą	६६
जगर <b>ण्</b> हेतु		ર १	۶۶ د م
<b>बीनपरि</b> खति			₹ <b>₹</b> ₹
र्ज्ञवसमाम		₹-१	
र्जातममाम		३-१	१३
जैन <b>सिङ्ग</b>		₹.	<b>∂</b> €-
"यचरमञ्जूष्		3-8	00
<b>त्र्यवरम्</b> त्ररर्ष		₹ ₹	(৬१
<sup>-</sup> यक्तशरीर		₹-8	१०६

[ = 1	
तर्व्यतिरिक्ततिन	รื่อง €
तप श्राराधनी	ે ₹-७
द्रव्यप्रमाण	३-२३४
द्रव्यपरिवर्तनके काल	3-888
द्रव्य शन्य	३२०∙
द्रव्यार्थिमनय	३-२३३
द्रव्यार्थितनयके नित्तेष	3-258
दर्शनमोहनीयकी प्रकृति	ર્વ-३૪
दर्शनावरस्य ही देशनाति प्रदृति	३-४४
दर्शनापरणके बन्धस्थान	३-११०
दर्शनावरणक सत्त्रस्थान	३ १०१
दुर्भगित्र	3 85
दुरागयसे उत्तर देनेके दूपखामाम	3-२१२
देखा	३ १३४
देशस्यत	३ २४४
देशामधि	ર-₹દ્ય
ध्याता	३≍
ध्यानसामग्री	3 8
प्यानाभ्याम	3-⊏3
धर्मद्रत्यके विशेषगुण	३-११६
धर्मी ?	, <u>₹</u> .980

नमस्तर , , , ३-१३५ नमस्तरिके तीन श्रङ्ग
नमस्वारके तीन छङ्ग 3-६3 नथ ३-८ नवर ३-१४ नाडो ३१४० नारमम्प्यर्शनप्रावहतु ३-४० निन्वप्रच १२०४ निमर्ग ३-१४४ नैगमनप ३-१९४
नय ३ २८ नवन ३-२४ नाही ३ १४० नारमम्पर्यंनासबहुत ३-४० निन्यस्म १ ३ २०४ निम्म ३-११४
नवन ३-२४ नाही ३१४० नारमम्प्यदर्शनसम्बद्धतु ३-४० निन्वस्थन , ३२०४ निमर्ग ३-११४ नैगमनप ३-१९४
नाही 3 १४० नारमम्पर्यंनग्राबद्वतु 2-४० निन्वप्रच , ३ २०४ निमर्ग 3-१५५ नैगमनप 3-१९४
नारम्मस्पर्गनगबहतु २-४० निन्दायन , ३२०४ निमर्ग २ ३-१४५ नैगमनप २-१२४
निन्वप्रथम , ३२०४ निमर्ग २ 3-१४५ नैगमनप ३-१२४
निसर्गे 3-१५५ नैगमनय ३-१२४
नैगमनय ३-१२४
\$-955
नैगमनयशीश्रत्रति ३००३
नोग्रागमजिन ३१६२
नोग्रागमद्रव्यकृति ३१=६
नोग्रागमद्रव्यर्भ ३१०३
नोक्रमिक्रीणा ३-३४
प्रत्यत् ३-१=४
प्रत्यत्त्वान ३३१
प्रथम पृथ्वीके सम्यग्द्रष्टिनारकी ३२४१
प्रमाणामाम ३ २६
त्रमनविरच <sup>३</sup> –२४५
प्रामाएयभी स्वत उत्पत्ति माननेपर विकल्प ३ २२१

[ 38 ]		
प्रोपघोपनाम		३१०
<b>पचेन्द्रियतिर्यंश्च</b> े	-	३-१६⊏
पद		રૂં હેંઠ
पर्यायनगम		३ २२⊏
परिग्रह		३६०
परिहार	1:	३-२१०
परीतासरयात		३ १५
परीतानत		3-१⊏
पल्य		३६०
पान		રે- <b>૨</b> ૫
पान		ैं३ २६
पारिखामिरभार		1539-6
पेञ्ज		३ २४०
बध		३ ७५ ,
षधरारण		ई १५5
बध त्रिमङ्गी		30 €
बाह्यतपक्री वहा वहनेके कारण	3	<sup>1</sup> 3-70E
भक्त प्रतिज्ञा		३ २१
भव्य		<b>ૅ</b> ३ `१ े ⊃ ⊃ ˜
भनपद्भति		₹ ₹€
भत्रनिर्देश		

	[ ३२ ] <b>:</b>
भाररान्य	3-966
भवते चैतन्यकी श्रमिव्यक्तिपर निरुत्प	3 220
मीग	3-888
भोगभृमि	- 3-20
मनार	३ =२
मप्त्रीपृर्श्वीम इन्द्रक्रिक्ल	<b>३-</b> ६४
मति रान	३-१३८
मध्यप्रवेषय	- <b>३-</b> ६७
मध्यमश्रातक	३-५१
मनोगुप्ति	३-२०५
मनोगुप्तिके व्यक्तिचार	३-२०६
मि <i>व्</i> यादर्शन	३-१३३
<b>स</b> नि	३ २३
,समुद्ध	3000
मूडवा	- ३ ५५
मृतवर्मुके उदयस्थान	३-१०⊏
म्लरमंके सन्वस्थान	-3-9-E
म्लक्रणकृतिके प्ररूपर व्यविरार	₹-१६१
मोहनीयकी तीन वंघस्थान वाली प्रकृति	३ ११४
मोहनीय की तीन मध्यस्थान पाली प्रकृति मोद्यमार्ग गामग्री	₹ <b>-</b> ११५
माय्नाय पानश्रा	3-820

[ 33 ]	
युक्तानन्त	₹-१०
युक्तामग्ब्याव	રૂ-१૪
योग	३ १४४
योगस्थान	ર-⊏8
रत्नप्रभाके भाग	રે-⊏4
रतन्त्रय	₹-१
लच्या है दोप	ર- <b>६</b> ૪
लोक सोक	३१५⊏
्यन्तरोंके निगमके प्रकार	₹-£¥
च्यवहार प्रमास	३१७६
	३ २५ <b>२</b>
च्याहारमम्य <del>त्त</del> व	-
वक्तव्यती	३ २३१
<b>यत्तऋद्धि</b>	३-१०२
चलप्राण	३-१५७
पाग्गुप्तिके दोप	३-२०७
वात वलय	38 €
विञ्लितिर	३-१्१७
<b>निग्रहनकगति</b>	३ ४६
<b>विद्या</b>	₹-१६६
विद्याघरों से निया	३⊏६
विमान	
	₹-5-

	[ اود ]
बिल	<b>३-</b> २२६
तिषयाभास	३-१४=
तितानाद्वे वेपीपकमहीपलम्भापर निकन्य	3-5 64
निदह त्तेत्रक प्रत्येक दशोंम तीर्वे	३-१३६
चेद	३-१६१
वेदक सम्यक्त के दोप	३-३३
वैदियक मिश्रराययोगी	á-53 <i>1</i>
वैकियक्शरीरकी मुलक्रसकृति	३१=६
था <b>र</b>	३-२२
भारक	३-१२७
श्रीगृहम होने वाले रत्न	३ १०१
ग <sup>-</sup> दनय	३ ७३
श≈य	3 ≂ €
शास्त्र	₹-≂⊏
शुभभाव	३००१
शुभन्तेश्या	३४⊏
पट्पर्याप्तिपूर्ण <i>∓र</i> ने <b>रा</b> खे	३-२३६
पर् श्रपर्याप्तिमाले	३-२३७
<b>रु</b> म्भोत्पत्ति हेतु	ર-₹૪૫
स्यानगृद्धिप्रिः	₹ 80

ľ	38	3	
स्य	र्गादिव	कि निमानोंक प्रशार	३ १४२
स्व	गरीरां	ने ग्रात्मारी भिन्न न माननेपर निकल्प	इ ३१=
स्य	नान :	री स्वमविदित न माननेपर विशन्प	३१६ ह
सर	ल प्र	पाणींकेस्वत श्रामाएय माननेपर निरन	१३ २२•
744	ग ति	भर्द्गी	3=0
सर	नमाम	प्री	3 %=
सर्ग	नेरपं	सहरारीके राडक निरूच	3 200
मर्1	नेर्र्ष	महरारी आयापि इत्यके खडक विकन्प	3 10=
र्मा	नेर्ग	सहरारी गुरुके खटक त्रिरूप	3 152
सन	यस्त	<b>चपत्रके सुनने योग्य रथा</b>	3-17=
		गराधना	3-2
स्य	यरद्व	ीन	\$ 25
म्	परिम	ध्यादृष्टि	3 =47
स	<b>नय</b>		2 130
भ	माधिम	ारण	3-65
स	तम म	नि	3 900
स	विकल		3 7=0
		गानिवर्त्यक श्रध्यवसायवके सहक्रिस्ट :	3 7=7
	रान्ति		3-708
स	गन्ति	· .	ৰ কুণ্ড <sup>য়</sup>
सः	पाउ		3 *

	ſ	३६	3
सनिमार्गषा		3-5	ŧ₹
सागर		<b>३-</b> ६	٤,
सीतानदीके उत्तर तटपर विभगानदी		₹ 8	e.
सीतानदीकें दक्तिण तटपर निमगानदी		₹ 8	=
मीतोडानदीके उत्तर तटपर विभगानदी		3 80	•
मीतोदानदीके दविख तटवर निभगानदी		₹ 8	3
मुखादिकेभिन्न माननेपरमी सम्य मिद्ध करनेपर	147	प३-	१२५
<b>स</b> त्त्मित्रः		₹ १	38
<b>ग्र</b> ोपमपत्		3 :	v:
हेतु		3	şo.
चायोपश्रमिक दर्शन		३-१६	8
चायोपगमिक मम्यक्त्व		३ १:	18
<b>त्रमति</b> क		3-5	33
शातप्रमेयद्वित्वसे प्रमाखद्वित्वके ज्ञानमे विवन्प		3 25	8
नानके श्रतिचार		₹-ə,	εo
<b>ानाराधना</b>		3	-¥
नायस्थरीर		३-१	s Br
नायम भूत शारीर		₹-१∙	ρŲ
नायक्शरीरके स्त्रागमद्रव्यिन		३ १६	ξ₹.
चतुर्घ भ्रध्याय			
श्यकृतिमग्रासादद्वार -		8-53	₹२

1 30 1	
1 49 1	
-अगुरत्तपुचतुष्य	8-34
श्रघातिया कर्म	8-85
श्रङ्ग_ल	8 48
थनींन -	४-२/६
यन्त स्थ	४ १⊏१
<del>चन्तरायाश्रवहेतु</del>	3-8=0
श्रन्यदृष्टान्ताभास	858
श्रनन्तचतुष्टय	४२०६
<sup>-</sup> त्र्यनतातुपन्धी <i>म्</i> पा <i>प</i>	<b>છ-પ્ર</b>
श्रन।हारक	४ २५७
थनुपालना शुद्धि	3 4 8
थनु <b>नीवीगु</b> ण	४ २१०
श्रनुगम	နှံ ၁၁೪
श्रवुमानसेयस्यमंत्रिदितनानमिद्विकेमाधनपरितर	ल्प४-२३⊏
<b>यनु</b> योग	8-900
श्चप्रत्यारयानागरण	४ ६
श्रप्रतिपश्चि	४ २३५
श्रप्रमत्तम उद्यय्युञ्जिनप्रकृति	८ ६४४
अपर्याप्त इीन्द्रियके प्राण	8 4 4
व्यर्फ्वररणके चरमभागम प्रन्य पुन्त्रिश्च प्रकृति	છ १५३
त्रमार	<b>४ ६</b> ६

at .

	[ 3= ]
ग्रमिनदगपूर्वस्य	४७४
श्चमूर्ते यश्ति राय	8 88
चरतिवेटनीयाश्राहेतु	४-२०६
<b>अ</b> प्रतार	४-२४२
श्चत्रधिमन पर्ययतिशेषक	ઇ ૨ - ર
श्रमधिनिषय	४ २२७
त्रशन	४-६⊏
थ्यशनके स्फुटदोप	४ = १
यशुष्रशययोगकी जाति	४-१=७
यशुभनामप्रमेते था स्रहेतु	८ १६५
यमस्याचन	8-05
श्रमख्यातनारनिरा"य	ઇ-१૫૬
अनयमके गुणस्थान	४ ३६
श्रानुषु र्य	, ४३
आयु	6.8
श्रायुधगृहमात्रीरत्न	४-१३०
यार्तध्यान	४ २३
श्रारा इन्द्रके दिशानिल	४ १०४
याराधना	880
<b>था</b> श्रम	४ ७६
ঘাপ্ৰ	४ ३०

[ <b>ર</b> દ ¹	
ध्याश्रतमुर यदोप	४ २०३
श्राहार सनाके बायहेत	8 =0
चाहारके महारोप	४-१८३
ईयपिथ शद्धि	કેળ-છે
उपमर्ग	ያ ኔ=ያ
<b>उपया</b>	৪ ১=১
एक लपा	४ २६३
ऋषि	४-=३
एकेन्द्रियके जीवसमाम	८ ४६
एकोपलम्भस्पमहोपलभक्ष र डक्किक्प	४ २३७
श्रीहे गिर	४७०
भौदारिक मित्रराय योगी	४-२४३
<b>मो</b> घ	४१०
न्नोघ	४-१४
क्था	१ ४३
रर्म	८ १४०
<b>क्</b> रमस्ता	८ ६४१
क् <b>र्मेश्रृ</b> भित्रमनुष्यजीयसमास	3 € =
रन्य द्रोंनी गणिनामहत्तरीनी पुरीके नाम	४-११४
क्ल्पोपस्रोक प्रविचार	४ १६७
<b>म्पाय</b>	88

	( 40 J
यपाय	34
यपाय बंगार्व मरख	४-१६०
क्यायविवर	કુરુદ પુ
<b>काषोतामन्यात्राले</b> श्रीय	જ સ્પૃર
<b>कायान्मर्ग</b>	४ = र
वार्माणराय योगी	8-540
वारत्रमात्रन्यके राउत्रवित्रन्य	४ २२१
<b>बु</b> णील	3-286
य प्रतिसमृद्धात	¥•= <b>ફ</b>
कृष्ण सेरया वाले जीर	८ ३४०
प्रन्यकृति	४ २-४
ग्नदन्त	૪-૧૨૦
गति	४१
षातिय'रम	५ ४१
चतुरचरमत्र <b>रखे</b>	8-268
चतुरवरम् त्राण	४ २१४
घन्द्रर्श मुरुय देवी	४-११०
<b>पारित्र</b>	४-२१३
चारित्रमोहनीयक प्राश्रतमुग्यदेतु	४-१६२
सम्पूर्दीपचतुर्दिग्द्वार 	४-१३३
লি <b>ন</b>	४ २२६

४ १७६
S \$100
भु १६४
४ १६६
B 205
४ १०३
८ ४०म
४ ३६०
S saE
<b>४-२</b> १ह
४ १०६
४-२११
ते ४-१७३
9-110
h-200 -
8-808
४ =७
8-52
४ २०१
४६३
8 232

	f	ષર 1
देव		8 84
π		४ २४७
दमचतुष्क		<b>४-३३</b>
देवगतिमें सम्यन्दर्शनके वाह्यसाधन		8 8=
दशसयतगुणस्थानमें बन्धव्युद्धिसप्रकृति 🖟		४ १५२
दोप		. ક-દ્રય
घ्यान		ષ્ઠ-૨૨
ध्यानमामग्री		४३६४
घर्म्यध्यान	,	४ २५
घर्म हत्त्त्रण		४ २०७
नन्दनानस्थ भवन		४-११६
नन्दीथरद्वीपमें वन		४ १३६
न टीश्वरद्वीपर्ने पूर्वेदिशिरापी ,		8 580
" " " के श्रधीरादेव		8 585
नन्दीश्वरद्वीपमें द्विणदिशित्रापी		8-585
" " " के अवीशदेव		४-१४३
नन्दीश्वरद्वीपम पश्चिमदिशितापी		8–\$88
" " " के श्रदीसदेव		8-684
नन्यश्रद्धीपमें उत्तरदिशितापी		४ १४६
" ' " के स्प्रीशदन		४ १४७ .
नमस्मारके अङ्ग चार		४ ६२

83	
नरक चतुष्क	2>-580
नारक	ः १८ २८ १
नामिगिरि	ું ૪ १ર≃
नि <b>चे</b> प	<b>જ-૨</b> १૨
नील लेरयामले जीव	<b>છ-</b> ૨ર્પ્ર
प्रकृतिनन्ध	४ ६७
प्रत्याख्यानागरण	8-10
त्रमायफत्	४ २५⊏
त्रना	ನೆ೨೨⊏
श्रशस्तराग	<b>४-२३</b> ०
प्रायोगिर <b>ग्य</b> न्द	· 3-103
पञ्चेन्द्रिय जीरममास	1 8-10
पण्डित मरण	ಸ <b>{</b> ೯⊏
पद	ध <del>-</del> २०४
पर्याप्त एकेन्द्रियके प्राख	ઇ-૫ઇ
पर्याप्त नरम	५ ५४६
" देन	L8-18=
परम्परितरोधि सङ्भाव	४ २१७
पारुद्वरत्रनमं शिला	ઇ-१२१
पाएडकानम भान	४ ११≂
पापानुमाग	४ २०

Ť		
	1	91 ]
वापोपटेश	1	ष्ठ ७७
पुएयानुभाग		४२१
पुद्गलक गुष	~-	५ ४३
पुर्गलभेद		8-855
वध ,		8-33
"	T	४ ३२
भयपेदनोयनोरयायाश्रय हेतु		४-२०५
भन्य		8 500
भायाभन्यमाभारण लन्धि		8-28=
<b>मत्रत्रिपार्क्ये</b>		४ १४=
भारता		8 =4
भोगभूमिन तिर्यञ्चपन्रेन्द्रियके नीरममास		४ इ.६
" " "		७३ ५
भोगभृमित्र मनुष्य जीवसमास		કેક પ
मङ्गत्त्रके प्रयोजन 🤭		8 = દ
मनुष्यापुर्वन्यके मुख्य हेतु	F	४ १६३
मनोयोग		४ ३७
मृगारि र ति		,૪-૧⊏પ્ર
माप्रवीरन्छरक रिशानिल		B-600
मान		8-68
मान		५१ ५

44	
माया	2 22
माया	8-5 £
मक्जीरोरी उर्घंगतिके बारख	४-१६३
मुहा	8 233
मृल उर्भक्र बन्धस्थान	8-84⊏
<b>मृ</b> नाश्रतस्थान	५ १६०
मेर्रान	5-86 म
मेम्बनम्थभवनाविषति	४ ११६
मोहनीयचतुष्य प्रथस्थानप्रकृति	४ १७२
भोहनीय चतुष्होटयस्थानप्रकृति	8-308
मोडनीय चतुष्य मन्यस्थानप्रकृति	કે-૪૭૧
यधाग्यातिहार शुद्धि मयत	នៃភភភ
स्चनाभ्यंतरग्रुग्यचतुर्दिक्रट	४ १३५
" विद्यासिनीदर्ग	५-१३६
म्चराम्यतराभ्यतर् चतुर्दिकरृट	৪-१३७
" त्रियासिनाडरी	४ १३=
रीद्रध्यान	8 58
त्तरणशप्रुद्धदिरगतपाताल	४-१३४
लीरोत्तर प्रमाण	ध-११ ६
लीम	४१३
स्रोम	४ १७

	[ ८६
व्यतिरेक दशन्ताभाम	8 63
प्रक्षप्रभोत्तरम्पे द्वर विमान	8-970
<b>प्रच</b> न	886
वचनयोग	8 ३६
वचन मस्रारके श्रन्तरंग प्रयत्न	४ २६१
वर्णचतुष्य	, ४३४
वगार्तमरण	888
वशार्र मरण	૪ १⊏8
प्रचारहट नाम	४ १२६
<b>प्रा</b> क्य	४-१६२
राचिर निभय	8-232
वादकं श्रम	४ २३४
निस्था	જ પ્રગ
<b>निमारीरस</b>	४ ६२
निप्रहगति	४ ४७
निदिशा	४ ६४
विदेह	४-१६५
निनय .	४६०
निपासी	४-१६
निशानगुणपर्याय -	४-१७=
विविक्तशृश्यामनके प्रयोजन	g-23 <b>9</b>

{ 83 '	
<b>निल</b>	४ १०८
वेटक सम्यक्त्यः	8 202
वेदर मम्यग्दष्टि	λ-5ã <u>"</u>
वेदमागणा	888
वैकियक्काययोगी	૪-૨૪૬
शास्त्रादरहेतु	8-220
शिकात्रत	<b>8–</b> ३७
27	<b>ઇ-</b> ₹⊏
"	35-8
शुक्लध्यान	४ २६
शुभनामकर्गाश्रयमुर्पहेतु	४-१६६
स्थानर चतुष्क	४ १५६
स्बद् <sup>द</sup> र	8-848
स्पर्शान्तराय	४ ७१
स्वर्गटचिखेन्द्रदिग्मिमान	४-११२
स्वगोत्तरेन्द्रदिग्यिमान	४ ११३ ।
सम्यक्त्वगुण्	8-4⊏
सम्यक्तार्द्ध वगुण	8-85.8
सयोगिजिनके प्राण	४-६१
सर्वाश्रिघट दोष	8 08
मित्रिन्त्पप्रमाण	8 305-

	[ 8= ]
सज्ञलनप्रपाय	y z
म्बिनम्पर 🗸	P-9=0
सयोग	८ ५८८
मना	ઇ-પ્ર૧
मार्	8 =8
सामान्यकेण्यात्यक्तिमरहतहुण्या वर्षेरहनेपरिका	रापप्ट २३६
मामापित्र-छटोपस्थापनाशुद्धिभयत	8 २६४
मामाटनम च्युिद्रज्ञ थाश्रत	8 9 6 9
सीनानत्रीक उत्तरतीरपर वदार	8 323
मीनानदीक दिवाण तीरपर प्रवार	8 258
मीनोदा नदीके उत्तर तीरपर बनार	४-१२६
मीतारा नदीक दक्षिण तीरपर उचार	8 854
सीमतरन्द्रको दिग्जिल	3 908
सर्वेशी मुग्यदेवी	8 383
सृष्टिमारणुके विकल्प	४ २२३
र्सावर्मेन्द्रविमानपाश्यस्थनगर - ,	388
सीवर्मेनोरपालरन्पतिमान	४ १२०
नीमनस्यनम् भवन	४ ११७
हिमर इन्द्ररके दिग्यिल	४१०६
हिसा 	8 0=
<b>हि</b> सा	5-2£21

[ At ]	
हेत्याभाम ो	~ <b>8-</b> E3
चपक शरया	४-१⊏६
चायोपशमिर ज्ञान	,४-२६
चीणमोहमें त्युच्छिन्न घाश्रर	8-848
चेत्रतिपारी प्रकृति	8 18E
<b>अ</b> स	४ ४६
ज्ञारुच्यापारके धर्मेम्बभाव माननेपर विवरूप	ध १२२
ज्ञानको सर्वथा परोचमाननेपर प्रकाशनापर त्रिक	न्पिष्ठ २४३
ञ्चान हो ज्ञानान्तरवेद्य माननेपरभी अनवस्थाके श्रम	नापपर जिवन्य
	४ २४०
ज्ञानमे ज्ञानित्रयारा त्रिरोध माननेपर निवन्य	3\$¢ 8

पञ्चम श्रध्याय

ज्ञानापरणकी देशपाति शक्ति

ऋस्पाय श्रचलद्रव्य

श्रचौर्यं त्रतभागना

यनीय द्रव्य

यगुत्रत श्चतिथिमविभागत्रत

श्रन्तराय श्रन्तिमतीर्धेकर नाम y-?==

Y ZO

य-६१

4-42

4-83 ' ¥ 9

y\_58

8-7=

मन्त्रलनुहर् ी के समापारण मार έλης ग्रापर्वि भागम माहि अरुपानाङ्ग अपर्याप्तत्रीनि भुजार <sub>सर्गास</sub> श्चपरिग्रहमत १ feFil ग्रभस्य to to stand श्रयोगिके विकेश forten श्चरिष्टे न्द्रक विमाः श्रशुममान थस्तिकाय **यस्तेयाणु**जनातिचार थ्यम विलयमायना थहिंमात्रत माउना श्चहिंमाणुत्रनाति चार श्रवदिपय ध्यचर लिपि श्राचार श्रापार थामिनियोगियनान



धन्यदर्डनत्रे धृति गर	५ ३⊏
द्यनिवृत्तिकरण गुणस्थानम २धव्युन्डिन प्रकृति	4-E2
श्रनृद्धिप्राप्तार्ये	५ ५७
श्रनुत्तरिमान	4-88
<b>अनुमानाङ्ग</b>	४ ८०
श्रपर्पाप्तत्रीन्द्रियके प्राण	ā-83
श्रपरिग्रहवत भावना	४-६३
श्रभद्रय	A-60
श्रयोगिकेनलिंका भाल	५-११६
श्रिरेष्टे न्द्रक विमान	¥ ==
श्रशुभभार	४-१६५
<b>ग्र</b> स्तिकाय	५ ३७
श्रस्तेयागुप्रवातिचार	५-३३
श्रम क्लिप्टमानना	५१२⊏
श्रहिमात्रत मारना	3 4 6
र्थ्याहमाणुत्रताति चार	५ ३१
श्रचतिषय	५-२५
भ्रदर लिपि	५ ⊏३
याचा <b>र</b>	A 8
श्रा गर	५ ७०
थाभिनिरोधिक्षत्रान	ภีออ

1 30 ]

[ 12 ]	
श्राराधनाके श्रंग	થ-१३२
द्याभर्य	গ্ৰ খা
<b>भा</b> मग्रमरल	3-888
इंडिय	4-55
इन्डिय निषेत्र	ય १၁૬
इन्द्रियाक श्राकार	ય १२
उपन	<b>य-</b> ६४
उपमपन	५ ७२
ॐगर्भिनाचर	प्र पृष्ट
<b>न्या</b>	1 80€
<b>म्बर्ग</b>	4-88=
<b>क्त्या</b> ण्य	. 185
यानके यार्थ	a-15°
गनिमार्गेला	3¢ k_
र्गाहत वचन	ય-૧૨૧
चमर्न्डरी यद्रमहिपी	य १८२
चर्म	શ-ફેક્ટ
चारित्र	४२⊏
प्लिस	ध-६६
ज्योतिष्य <b>ेव</b>	4-84
जनगय	2 /95
¥	a.

	[ 2,5 }
जाति	1-58
जीवके श्रसाचारण भार	ልሽል
जीय ममाम	म-१००
हवर्ग	धू-१२०
टव्ग तर्गाचर	<b>५-</b> १२१
त्रगापर तिथि	ब-१६३
ाताथ तिथिदेनता	भ १६४
(तायंड्य तिर्यंड्य	ध-१⊏०
तियञ्य दर्भनापरणपञ्चकोदयम्थानप्रकृति	4 805
314146424313444114246	Eog y
17 11	४-१०४
" "	¥01-2
27	५ १०६
दर्शनमोहके या सम्बेह मण्यहतु	थ ६७
द्शिविशिव मधुद्रात	<b>ম-</b> १४ <i>७</i>
दाताके सामृष्ण	30 ¥
दिग्वतके व्यतिचार	भ ३६
दुर्भारना	४-१६६
द्धिरादाङ्ग	ય ⊏ત
देनायुन धर्क मुग्यहेतु	33 ¥
देशप्रतरे श्रविचार	थ ३७

•	
[ F4 ]	
घारणा	य ६⊏
नमस्यारके पञ्चयम	४ ४३
नारनोक ग्रुग्य लवण	५-१३७
नित्यमनको प्रतिनियतात्ममंत्र'ती माननेपर	६७६ ४
निद्रा	¥ <b>⊏ ⟨</b>
निदानचिन्ता	ત-≃8
नोर्र्म	4-536
प्रत्यक्रानम्पतिकाय	४-११३
प्रमत्तगुणुम्थानम उदयन्युच्छित्र प्रकृति	प्र हम
त्रमाख	4-800
त्रमाणाभाग	म ४८म
"	3=9-4
प्रायंतित स्त	५ ७६
शोपपोपपाम व्रवके व्यतिचार	4.50
पञ्च पैतन्ला	५ ६६
पत्र्चाच्यम्पर्यार्थे	न ६४०
"	A-6A6
"	४-१४२
"	त ६५३
. 19	५ १५४
#	4-844
	4"

	ſ	28 J
पञ्चाद्यसम्प्रवर्ष		प १५६
पञ्जेन्द्रिय तियञ्च		५-१⊏२
पर्याप्त पञ्जेन्द्रिय तिर्यञ्च		५-१⊏३
पर्याप्त तिर्यञ्च		त-१८८
पर्याप्त स्त्री		ग-१८६
परमेछी	í	५-१३
परिकर्म		¥- <u>,</u> 9₹
परिग्रहपरिमाखाणुत्रतके श्रतिचार		५-३५
पतर्भे ,		तं ४०५
पाप		カーぞ
पापस्थान		४-७८
पात्र		थ ६६
प्जाफे व्यग		५ ७४
प्जाके भेद		A =5
प्रक्षचर्यं प्रत भावना		५ ६२
प्रदाचर्याणुत्रवके श्रविचार		ा ३८
महाचारी		४ ६५
ब्राह्मसत्त्रादि जातिके घटक विकल्प		५ १७१
' स त		४-१५६
२धन		न-६६
नभहेतु		४ १४⊏

		• •	
1 24 1	_		
¥ {1 <sup>t</sup>	[ ۲۲ ]		
4 (	वादातपत्री वायताके कारण	í	<b>५-१</b> ६७
¥ (	भ्रष्ट मुनि		४-१४⊏
¥ 🛊 1	भागहार		प्र ४८
4 5 8	`मार्नेप्रमाख		४-१७≂
y F	भिद्यापृत्ति		<i>90 y</i>
¥-5°	भोगोपभौगपरिमाखनतके ध	गविचार	88 k
¥ 31	मतितानके पर्यायवाची		4~308
A \$45	मरण		४-८६
¥τ	महात्रत		ρp
4-67	मायात्रशार्तपरण		४-१३४
¥ 90	मिथ्यान्त्र		४-३०
1-104	मिथ्यात्वमे उदयव्युच्छिन्नः	<b>ক্রি</b>	83 K
y zł	मिथ्या रमे व्युछिनश्राश्रर		५-६⊏
¥	मुनि _		પૂર્ય ૦
\$8	म्लकरण कृति		४-१६१
Ę.	मेरु		ā- <b>≃</b> €
७१	मोहनीयपश्चम्यधस्यानप्रकृ		4-8 0 8
34	मोहनीयपश्चर्यादयस्थानपः	sia	म १०७
१६	# #		4-60℃
<b>š</b> 1-	22 21		3=8-58

	ſ	<b>√</b> ६ ]
मोहनीयपञ्चनोदयस्थानप्रकृति		५११ ए
योगस्थान		ય દરે
योनिमती पञ्चेन्द्रियतिर्यञ्च		y-9= ₹
₹₩		9-8=
∉f4		9 =
** *		y 952
स्यतहार वर्ग		4-880
वर्ष		કેર પ્ર
<b>बालमर</b> ण		५-१३३ .
गलप्रक्षचारी वीर्थं रर		प्र-५६
विद्यागिद्द <b>णके व्याभ्यन्तरकार</b> ण		५-१७६
विद्याशिचणके वाध शारण		प्र १७५
विदेह		ષ દછ
त्रिनय		7-7⊏
<b>चि</b> षेक		४ १२४
17		५-१६२
वैरोचनेन्द्रकी यग्रमहिषी		४-१४३
शन्दप्रशृति		9-900 o
शञ्जोचारएके श्राभ्यन्तर प्रयत्न		भ =६
शर र		પ્ર १ પ્ર
शुद्धनयदृण्यभाव		4-888
• "		- 110

1 20 1		
! শুৱি		<b>७ १२३</b>
17		ય-१२8
शुद्धमिथ्यादृष्टितिर्येश्च		4-5=0
शून		¥-8££
शेषमननवासियोंकी अप्रमहिषी		4-688
<u> शोकवेदनीयनोत्रपायाश्चरहेतु</u>		4-686
स्त्री		.તે-ઠે≃તે
स्थावर बीच		४-१४६
स्थानरोके श्रामार		य-१४७
स्मृतिप्रमोपस्त्ररूपके खडक निरूप		थ १६०
स्वाघ्याय		a ८ ह
सत्यवतकीमापना		¥-Ę0
सन्यागुजनके श्रतिचार		ય રેર
सम्यग्दर्शनकी लिध		¥ = 3
सम्यग्दर्शनके श्रतिचार		थ <b>-२१</b>
समाधिमरखमे बाह्य शुद्धि		¥-0=
समिति		ų-3 ų-3
सल्लेखनाविचार		र-५ ५-२०
सक्रमण		λ βα: *-40
सक्लिप्टमावना		য় ৪৬ ° য় গহও
राधात 🕶	-	ચ / <b>રહ</b> પ્≟શ્હ *
		4-10

	{ z= }
मयमक रमत्याग	प्र-१६=
मश्रप	ય-१३૫
ससार परिवर्तन	~ ā-58
सामायिक्त्यतके श्रतिचार	ય-રફ
सीवानदी के हुद	त्र ६०
सीताद्वडाबीम	४-१३=
सीनोदानडीक हट	ત્રુ દુ
सीतोदाहृदावीग	४-१३६
सुरादिक भेट व अन्नत्यन होनेपर भी ह	गत्मीय
सिद्धिपर निवल्प	ં પ્ર૧૭૨
इस्वस्पर	ધ-११પં
हिमाप्रयोगक्रिया	५-१३०
शन	ય્રમ
नानापरस्थरमी	४-६
पष्ट श्रध्याय	
र्थ्यानराप	६ ७६
श्रद्धे तत्रसमादी केवल्पनाके स्वरूपके निवल्प	६-११०
श्चनन्तातुवधीके नोकर्भ	६्४⊏
भ्रनायतन	६-१⊏
"	६-११३
श्वनिष्टत्तिकत्सम् उत्र च्युच्चित्र प्रकृति	६६१

[	
श्रनिर्हात्तररागम व्युच्छित्रयाश्रन	<b>इ-</b> ६३
् अपर्याप्त चतुरिद्वियके प्राण	६ १६
मपूर्वे ररणमें व्युच्छिनयाश्रर	६-६२
ग्रमधिज्ञान	न्ह्-२३
त्रगरनवन	इ-ह६
श्चरनचराधिदेवता	इ-२७
य्यनसर्पिणीकालके भाग	₹-२४
<b>य्यारुद्धोपलन्धिहेतु</b>	६ ३२
श्रगनके पारण	६ ४१
<b>अशनत्यागके कार</b> ण	६ ४२
यच् <b>यान</b> त	€-83
श्रानतचतुर्फेन्द्रक्षिमान	६ ४४
ग्राभ्यन्तरतप	६-२०
<b>थालोचना</b>	ಕ-ಗೆ೨
<b>या</b> प्रथम	६-१३
<b>याहार</b>	१३ ३
इन्द्रियनिरोध	६-२५
इन्द्रियमार्गेणा	₹-₽
इन्द्रियानिस्ति	६-३
उत्सर्पिणीक्रानके भाग	६-२३
यतु ।	६६४

•	j	50 J
क्पाय-		\$ \$
<b>भा</b> य	- 1	εγ
<b>रा</b> यापिर् <b>नि</b>		६०
<b>कायोत्सर्ग</b>		ह ४१५
<del>र</del> ुलाचल		६-२६
गृहस्थोंकेषद्वर्म		६ १११
37 39		६-११२
गीन	ı	६-७
जयन्यश्राप		દ-૪૪
जीय समाम	1	६-६६
**		६ ६७
"		६-६≔
जीतके तिरोप गुण		६≔१
जुनुप्सानीक्यायाश्रमहेतु		६६३
तिर्पञ्चायुरघके ग्रुग्यहेतु		ें ६६५
द्रव्य <del></del> -		<b>4 900</b>
द्रव्यके मामान्यगुख दर्शन		३६ ३
दर्शनागरखरी देशघाती प्रकृति		६२१
दर्शनाररणके श्राक्ष	1.1	£-१२
दर्शनावरण की द्वितीयवधन्यानकी प्रकृति		ξξ=
र र र व्यापन वर्गात अकृति		इ इ ह

[ 48 '	
दर्शनायरणपट्यमन्यम्थानकी प्रकृति 🕝	६७०
दृशन्तामाम	६-१२७
नरवायुनन्थके मृग्यहेतु	६-६४
नो स्पायपट्क	દ પ્
प्रत्यार <sup>-</sup> यान	६५१
प्रतिक्रमण	ક-૪૬
प्रमत्तिरत्तम वधन्युन्छित्र प्रकृति	६-५६
प्रमाण	६-१२१
<sup>।</sup> प्रमादके गुण्म्थान	६६
पद्मलेश्याम चिद्व	६ ≂६
पर्याप्त द्वीन्द्रियके प्राण	6-61
पर्याप्ति	६-१४
पर्यायार्विक्नय	€ = 3
पानाहार	६⊏५
पुद्गलके तिणेर गुण	६ ≂२
पुजा	દ્દ છય
भेद	६ = ६
- महल	६५०
मि यास्त्रप्रकृति के नीवर्म	६ ५७
मोहनीयपट्कदयस्थान प्रकृति	६ ७१
" "	

		[+ <b>६</b> ^
मोहनीयपट्र	ोदयस्थान प्रकृति	ः ६७३
"	**	<b>ξ-</b> /98
"	"	६ ७४
**	"	₹ 0₹ 8-9 <b></b> €
**	"	
**	17	६ ७७
रतिनो रप।य	7.77	€ ७=
	194	६६३
रम ऋदि		, ६-४०
" "		, ६-५५
रम त्याग		5-988
रूपी अजीन		६-१०७
लेश्या		Ę=
लौिः रमान		6 3 8
व्यञ्जनपर्याय	र्नगम	६१२०
व्युमर्ग		-
<b>गरन</b> च्य		६-५३
<b>ारनचत्राधि</b>	<del></del>	'६ ६=
		33 }
<b>नस्तुषानरीति</b>	1	६-३⊏
वदना		६ ४७
नायुराय		<b>ξ-</b> ⊏ »
नायतप		ع·-۶
		, ,

६६०
६२६
६-११=
£- <del></del> -
६-३३
६ ३४
६-१०१
६ १०२
६-१०३
६ १०४
६-१०५
६-१०६
६४⊏
६ ३५
६ ३६
६ ⊏ષ્ઠ
६-५६
ξ- <b></b> ξυ
६१०≡ ६-१०६
५-१०८ ६११
47.

	<sup>म्</sup> रनन	Į fr.
	मुक्तानगण	١,
	म्बानगामान्यक अन्तरानमें अनुपनमक मामायिक माराक	France ( 11
	मारवक्रम	14#*4 * 0*
	E>	* 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1
	SIED THE	
	हास्यनीरपाषाश्चर रिनकान	€ 75
	Store Store	ابع
	भागास्त्र भाभा मान्स्री करू	<b>{</b> 53
	वानरी मुक्ता	t j 3
	The Inc.	£ }{4
	यजनेन्द्रकान्त्र यभियाचन वियाचन	
	भन्य स्वन श्रमुपनन्धिहत्	<b>%</b> -3≤
	अपार्ट्स हतु शाम्म	19 E
	अपर्यातपुरति श्रपर्यातपुरतिस्थान प्राम् श्रामुरहमारकी के	७२४
	अमुरङ्गारकी सेना	~ (9-6)
	अस्ति सेना अस्ति होड्स्ट स्य भाने अन्य	19-30
	श्रात्म हिन कारिका	. 13-EF
	भावन र	عدد ع
	~	•
		7.0
•		₹४

1[ 60 ]	3
मोहनीयमप्तरोदयस्थान प्रकृति	७ ₹ ७
, 11	७६१
11	७ ६३
77	<i>1</i> ७-६३
"	७ ६४
<sup>।</sup> मोनके व्यवसर	9-20
रानसन्यतर	19 ₹
, लेरयामार्गेषा	७१०
, च्यन्तरेन्द्रची सेना	10-80
ं च्यातरेन्द्रसेनाप्रधान	@-88
ू व्यमन	७ ४
्रे निजयार्थमानीरत्न	છ કર
ूं विपर्ययनिरामक र डफ विकल्प	७ = ४
, शस्त्रसम	७ ५०
र् शील	9-8
्रं शुक्ततीरयाक चिन्ह	000
, शुभोपयोग	७ इ.ह
भ्पर्शक अन्तराय	७६ ७
सप्तमङ्ग	७ १४
रप्ताचरमत्र वर्गा	५७ ७
"	७ ७४

•	1	६२ ]
निरचयव्यसन		७ ६६
प्रतिक्रमण ,		3° 0
प्रपाण		€3 &
प्रज्ञयम दृष्टिया		<i>ত-</i> ধৃ ০
पमलेग्याराले जीर		લ્ક છ
पर्याप्तश्रीन्द्रियक प्रागः		७ ६
परमम्थान		ניט
पनाभाग		৩-३६
पीतलेश्यात्राले जीत		93-0
भय		े ७ १३
मीनि		७-६०
भृत व्यतर		७-२=
भोननक व्यतराय		७ २६
भोगभूमिन मप्ताह्विर राय		<b>∩-</b> 8⊏
महन्द्रे रन्यन्द्रर विमान		<i>ত</i> -৪৯
मि <i>व्</i> यात्व		७ =७
मोहनायमत्रशत्यस्थान प्रकृति		<b>७-</b> ५५
17		७-५६
, ,		৩-४७
, ,,		<b>∪-</b> ¥≂
17		ઉષ્ટ છ

[ 69 ]	)
मोहनीयममरोदयस्थान प्रकृति	<i>७३</i> छ
27	જ દેશ
"	७ ६२
**	49-83
"	<b>જ-</b> ૬૪
मीनके व्यासर	9-20
र। चमञ्यंतर	£ 5 03
स्रेरयामार्गेखा	७ १०
व्यन्तरन्द्रची सेना	6-80
च्यातरन्द्रसेनाप्रधान 🗸	6-63
च्यमन	७४
निजयार्घभार्तारत्न	છ ₽€
निपर्ययनिरामके र ड <b>र</b> नि <del>र</del> ूप	ง⊏ง
श्वसर	cyo
शील	9-9
शुक्तलेश्याक चिन्द	·0-0°
शुभेषयोग	७६६
म्पर्शके अन्तराय	७३७
सप्तमङ्ग	७ १४
रप्ताचरमंत्र वर्षा	७-७४
"	<i>لای ی</i>

1
ひしら
৬ ৬৩
৬ ৩=
30.0
ه=٠
タニタ
Ø-=3
v≓₹
დ 3
49.60
v-13
<i>v</i> €
৬ ৬ १
<b>₩</b> \$
V-31
३४ ७
V \$ 4
৩ হত
७ १६
<b>⊏</b> -3°

1 == 1

,[ ६६ '	
ग्रधर्मद्रव्यके मामान्यगुण	<b>≈</b> 8 ¥
अन्तमार्गणा	, <b>z-</b> -23
<b>श्चनुभय</b> ाचन	, ⊏-58
<b>भनुयोगद्वार</b>	<b>⊏-</b> १२५
श्रप्रतिष्ठित शरीर	<b>ಪ</b> ೌಪ
श्रपहनसयम शुद्धि	E 3E
अनैशन्तिश हेत्याभाम	= 959
<b>प्रथमयनमार्ग्रा</b>	<b>⊏-</b> 9≎3
श्रप्टनरमंत्रपर्ण	= 2-0
"	ಷ-१०ಪ
"	309 =
"	= 990
**	=-999
11	E-885
"	=-११३
**	≂-११४
थ्रगनशुद्धि	= 3.
श्रमत्मत्तारामिद्धहेत्राभाम	= 78=
श्राप्ताशहायक सामान्यगुण	` = हे <b>६</b>
श्रागतुर मुनि परीदा	= १०३
भाचार्यरेगुण	~77E9-
	, h ,
	- · · · · · · · · · · · · · · · · · · ·

	ſ	ಅು	j
श्रार्यनिवाधर		=	ঽ৸
उन्चगोत्रके मुग्य व्यावर			υξ
उत्परपुष्टि चिषश्राद्व धन्यन्छि नत्रकृति		= 1	დ3
उपमात्रमाम्		=	¢=
उपशमसम्यम्ह <del>ि</del>		= 3	÷
चढि		=-	Įч
<b>म्म</b> द्विप्राप्तार्य		5-	34
र्यं(पिकार्धि		=	₹ ₹
,,		۳۱	90
र में		=	-7
र मृं रन्ध		=	3
रर्म् प्रप्रतियोके दृष्टान्त		= (	9
<b>क</b> र्भस्थिति रचनामे नेय रागि।		= (	9=
रायरे यह		= 1	, 0
<b>रामी</b> खपुद्गलहस्य		= 1	98
रालद्रव्यक् मामान्यगुण		<b>=</b> 6	v
गधर्मविद्या		=-{	şə
चारणभाद्धि		<b>≂-१</b> १	¥
चिक्तिसा		<b>=</b> १0	9
ज्योतिष्कदेव पद		<b>≂-</b> ∂	¥
जीरममाम		হ-৩	ŝ

[ 08 ]	
जोन समास	E-E0
जीन सामान्यगुण	= ६२
द्रव्यपर्यायनेगम	≂-१२२
दि <b>म्</b> गज	- = ४२
देशमयतमे उदयव्युच्छित प्रकृति	≂ ৩>
दैत्यिरिया	६४३
ध्यानक श्रङ्ग	= १०६
वर्मद्रव्यके सामान्यगुण	≂-8¥
नन्दनप्रनक्ष कृट	= Y o
न दनवनहृट शिग्यरस्यदिश्कल्या	E-43
नामक्रमक बन्धस्थान	E-194
नीच गोत्रके मुख्याश्रत	= 99
प्रातिहार्य	≂-१ <b>६</b>
पृथ्वी	=-११
<b>प्र</b> न्यनमात्रम	=-१२
पर्याप्तचतुरि इयके प्रास	= 0
परात्मवानी	= 8=
पुरस्क उपग्रह	= 85
पुटलके मामान्यगुण	= 83
पुनाक द्रव्य	=-2१ =-२१
भाव प्राण्	=-{{ ==-{{
	233
	_ar ~

	[ 50 ]
मङ्गलद्रव्य	: : = 48
मतिज्ञानक निषय	, ' = १२४
मद	= 18
महानिमित्त	ದಾರಿ
महारोग	≂ ११७
महाहिमत्रान्पर ३ट	≂-६६
मातद्गिवाधर	≂ २६
मानत्रशार्तमरण	⊏ १०४
मुनिक द्वारा प्रही गद कथा	= 208
मेरमध्यगत प्रदश	≂-११६
मोहनीयको श्रष्टकोदयस्थान प्रकृति	== {
n	2 2 2
19	= =₹
1	= =8
•	E-E ¥
•	⊏ ≂६
7	≂-≂७
7	E-22
-	23-2
7	= €0
*	≂ <b>१</b> ९

4
₹ <b>₹</b> ₹₹ ₹¥
₹₹ ₹8 ₹¥
₹8 ₹¥
Ų
Ę
e)
=
3-
35
•
१३
¥
¥!
ξĘ
9
v
0
\$

1 60 1
श्रापत्रक मुग्यगुक्त भे ँ देश
· "= E
शद्रीन्चारकस्थान । । । । ह ४१
स्वरी
स्पर्श क श्रन्तराय भागा है ।
म्मों विणेन्द्रमी त्रप्रदेशी रिक्का कि है देव
स्योगितस्द्रभी अग्रदेशी भारत के इस्
॰ सम्पक्तपोपसमुख मा भी भागता द्व-११६
मस्यादशनके अग १ मिताहर = १३
सम्यादर्शनके दोप १ ६-१५
मम्बग्हटिक बाह्यपुर्व 🗀 🚉 र 🖹 र र
सम्यानके श्रद्ध ा=३६६
<sup>र</sup> मिद्रके ग्रुप्यमुख <sup>राक्त</sup> =-१
र्साता नीन मन्यस्य निदेहदेश 💎 🔻 🖘 🖘
~ " " र की समधानी र <sup>लास</sup> े द्राप्त
मीनानिष्यमध्यस्थिविदहदेश 🥺 😘 🗠 ५५ ५
=
मीतो ानीलमध्यस्यनिदहदश । १९१२ 🖘 🖘 ५७
-५-" " सीरानधानी हार <i>ण न</i> ृष्ट-५०
ं वान= गु~्राच्युः र~र⊏भ१६
बानमार्गेणा गाः ८-८

SX s ! नां कियों स च्यग्निर्मार सी सेना धर्मत यमारिवैस्नमिक् वैध **अनुदिश**िमान **ग्रतुभय**गचन श्रानिरतमम्यक्ताने व्युन्छिनश्राश्रा -08-34- 4: यशुभोषयोग 7-67 यम् एया १ ₹-₹? ग्रागमद्रव्यकृतिके अधिरार उद्धिशुमारशी सेना १० है। १९ के के स्वयास सम्मातिक उपगान्तमोहमें ज्ञानव पेराप्तस्थविजयाभ्यस् कृद वायिवविनय € = 8 गैवेय्रेन्द्रयभिमान r+ -- 2-- +1 चक्रार्वीरी निधि E- -16-58F नीरममाम 8-8= £-884 द्योपरुमारकी सेना - וויווין פין दर्शनोपरसकी श्रञ्जति repre 32 दर्शनावरणुर्वा प्रथमवधस्थानमे प्रकृति 789

_		ſ	હદ	J
दर्शनागरणकी नगकमत्वस्थानप्रकृति				
दिक्रुमारकी सेना				-9
देवता				oß
नय				१₹
नववीर्टी			-3	•
नवनिधिके कार्य			€-	
नरागर मंच वर्ण			£-9	88
न्यान् भन्न वृद्धाः			£-(	Уę
ਸ			7-3	θĘ
# _			4-3	છ
n 7)			3-3	=
नागकुमारवी सेना			£-8	Ę
नामकर्मन्त्रप्रकृतिकमस्यस्थानप्रकृति			£-4	3
नारद		-	£-3	3
नारायेख		-	c.3	
निष्धपर इट			€-३	y
मीलपर्ग <b>तपर</b> क्ट			€-३	
नैगमनय			€ ⊏	
नीरुपाय			ĉ-	
नोकपायवशार्तमरख	1		8	
प्रतिनारायम्			£-2	
प्रसिद्धग्रह			6 3	-
			_	-

[ 00 ]	
प्रायश्वित	. , E-\$A
पटार्थ	8 3
पर्येप्तित्रसंक्षीपञ्चेन्द्रियके प्राण	११-३
पद्मामासज्यनुमानामास	8-=\$
पानदानकेश्वनसरपर भक्ति	े ६२६
पूजाके सर्गेद्रव्य	39-3
भविष्यउत्सिपणीकालके नारक	€ ≂ 3
भरतस्यविजयार्घपरक्ट	e 3⊏
भावीउत्सर्पिणीमें बल्देव	६ ४२
" " नारायस	¥83 ° ° °
" " प्रतिनारात्रण	48-3
मान्यवानगजदतपर कृट	35-3
मिथ्यादृष्टि	€=3
मेघापृथ्वीमं इन्द्रप्रवित्त	६-३३
मोइनीयक उदयस्थान	₹४इ े
मोहनीयनप्रवन्यस्थानप्रकृति	e <b>4-3</b>
"	5 k-3
**	१ ६ ४२
,,	६ ४ ३
"	84-3
11	E-44
```	*

	(	G=	l
मोहनीयनपत्र- अस्थानप्रकृति		<sub>१</sub> ८२५	Ę
p		£-¥	19
,	ادياري وال	, 8-4	Ξ,
योनि	-क्रासिक्त	, 3-8	ર
व्यन्तरों के चैत्यष्टच	קדיייתן דו	- 6-=	¥
बनभद्र		, 8,0	a,
<b>यस्तुधर्म</b>	וז ולידו, יזודו	, - & =	٤
वातकपारमी सेना	प्राम, म	- 6-0	9
प्राटरक्यायक गुण्स्थान	T + 77	ړ, ⊱-۱	8
विकलत्रयक्त जीवसमाम	r, m	£-8	
नियुत्त्रुमारकी सेना	ामकारी <i>"</i>	ફ-ફ	৩
विद्युत्प्रभगनदत्तपर उट	क्र मार	F #	0
शम्प्रवशीक्षणशस्त्रनिपत्ती	<b>ररण</b> म् त	7.8 %	ŝį
<b>भी</b> लकी बाह	ri	7.,35.7	છ
स्त्रनितर्ग्रमारकी सेना	T+ F		
स्वन्छन्दक नवण	rigoru -	, , 6, 5	3
सजात्यमद्भृतव्य रहार		1 6 5	ć
मजातिविज्ञात्यसद्भ्युवस्य पर		€-3	٥
मासारनम उदय्युन्उनम	<b>ट्</b> वि	, 5-8	
सुपर्दा इमारकी सेना		६ ६	=
सेनाक मेट		€-₹	¥

[ de ']	
≈ चपरकाहण्डसस्तरयो यता	78-49
<sup>2</sup> दीयि रमाव	″ ε <u>′</u> -६
- सीममीहमे चाश्रम	र ँ हं ६५
°श्रमनप्र∓	3-3
	L13. 1, E=6
<sup>१९</sup> , दशप अध्याय	, who
न् <b>श्र</b> म	<sup>7</sup> , १०-२४
० श्रथेग्रा <i>३</i> साह <i>त्रत्य</i> यद् <u>य</u> णार्थेपर निकल्प	30.02 20111
८ <b>चाविरतमम्यक्ताम</b> न घटननिञ्जनप्रकृति	,~१० ४३
-ध्यरानदोप	४० र्य
	TTT 11-1 20-22
श्रसरुपातगुणे निनरामय	" १० <i>१</i> २
' श्रातर्राद्रध्यानमहितागार्ननरस्	पोर भार १० €१
<b>्धातोचनाके दोप</b>	१० ००
<b>ड</b> पन[स	9008 1,7,"
<ul><li>उपासकाध्ययनक अभिकारनम्तु</li></ul>	₹ १० <b>-१</b> ६
<sup>≻</sup> द्योनिक्समाचार	117 80 X=
'प्रियानः दि	१० <del>४</del> २
क्रमा (क्रमीवस्था)	Letz , 59-50
' बन्परून	٣ عَ- ٢ عَ
`शमर यग	So Argani

-	[ =0 1 '
<b>मिनर</b>	. १०३=
<b>क्रिपुरू</b> प	~ <b>१०३</b> €
षुशीलमु नि	१०६०
कृष्णलेश्याके लच्या	१०-५६
केरलजानके ऋतिशय	१०-११
गधर्मव्य तर	१०-४१
चकरतींक भोग	28-02
जन्मके श्रतिशय	40-80
जीयसमाम	१० ४७
**	ः १०-४⊏
द्रन्यकं निशेषस्त्रभाव	१०-३४
द्रव्यप्राण	-\$0 A
द्रव्योः सामान्यगुण	१०-५१
द्रव्यार्धिमनय	१०-४२
द्वित्रक व्यक्तिर	१०-७४
दर्शनार्थ	- १० <b>-</b> ३
दर्गनके अन्तराय	१०-५३
दश्रमुराड	१०-३०
्दशाचर मत्रवर्षे	१०७०
देव्पद	६० ६त
धर्म	१०-१

1 =1 1	•	-0" 1	₩.
घर्म्च्यान	<b>~</b>	77.	ั <sub></sub> ٷ៰៝៝ <del>៲</del> ៰៓
नपु सम्वेदनीम्पायाश्रव			90-Ez.
नाम		٠,	90-19⊏
नामकर्मदशरमन्त्रस्थानप्रकृति			१०५०
नारक्योनि	,		१०-७७
प्रत्यार <b>्यान</b>		_	ু १० २३ ँ
पर्याप्तसनीके प्राण		~ .	۽ ڳه وڳي
पुद्रलके पर्याय			१०६५
पु वेदनोक्यायाश्रव			१० ६७
वाद्यतपके फल			१०-७५
भगनवासी			82-68 £
भगनवासीके चैतन्यवृत्त			१०३७
<b>म</b> रनरासीद्विणेन्द्र			१०-२६
मवनपामीउचरे द्र			१० २७
भवनवासीके मुदुटचिन्ह			१०-३६
मेद्भगप्रक्रियो <b>पयोगी</b>			१०-३४
मन पर्ययनानी			30-∘ ₹
महानिन्द्यभाषण			१० ४६ "
महोरगव्यन्तर			80-80
मैधुनदोप			१० २६
मोहनीयके च घस्थान		~	१०-४६
			2.0

	[ 1	=> 1
<b>ब्री</b> हर्नीय <b>दशकीदय</b> स्थानप्रकृति	1	o 8E
पद मानतीर्थ करक समय अन्त कतकेवली	:	₹0 €3
" " श्रीपपादिक	:	१०-६४
बाद्मपरिग्रह		१०-१३
<b>बे</b> याञ्चत्य		१५ ७
थमणरन्य		\$032
शुक्ललेखाके चिह		१०-५⊏
स्थानस्दशक		१० ४४
स्त्रीवेदनोद्वषायाश्रव		१०६६ः
सरपायक गुणस्थान		१०-४
सत्यवचन		१०-२१
मद्भारस्थाध्यक्रमी		₹0-0\$
सन्यामात्रसर्मं श्राचार्यका स्वसपर्मे निरामके	दोप	१०-४८
मम्य इत्व		, \$0-D
मम्यक्त्वविनयस्थान -		१०-६२
सम्यग्दष्टि ्		१०-८०
ममानसङ्कार्य		१०-३१
मर्वेदिणा		१० १६
संततिश्रीमीभारयादिविधायीत्राद्धिः त्र		१०-७२
संयोगीश्वरीर		१०३३
म्रममाम्परायमे श्राश्रत	٠	१०-५६

	( = 1 )	
	चपरभृमिशम्यायोग्यता	् १७ पृष
	त्र <b>सदश</b> म	จุ๊จ-ี่ยิ่ง
	धरिनराधारारकऋदिधमत्र	ર્શ-રેંગ
	श्चग्निमयवारक	ફેર ક્ષ્મ
	श्रध ररणरचनानेयराशि	११-१६
	श्रनन्त	११-२६
	<b>थ</b> दमिन्द्र '	११-५०
	एकादशान्तरवर्ण वाले भन्न	११ २४
	11 11	११ २ भ
	नरण (ज्योतिपत्रिपयक)	११-२३
	चल्पातीवेन्द्रविमान	७१-१७
	गनमदनियारणऋद्विमत	<b>११</b> ३ <b>१</b>
	चोरमयनिवारण सृद्धि मत्र	११-३२
	निनेन्द्रमें ११परिपह	6 2 7 3
	जीरममास	११-१⊏
	तिर्येगे मादश	११६
	द्रव्यके सामान्यस्यभाव	₹₹.
	दु'खितनेत्रदु खवारकऋद्विमंत्र	११ <b>४१</b>
	धनलामनिमित्त	११-४३
•	नीललेश्याके चिह	* \$ \$ - \$'e
	तवाधातारक ऋद्विमत	1 18 38
		A Property of the Party of the

	, ,
पट भरपक स्थान	११७
परमन्त्रः नेरारयादिनिधित्रत्रादिर्मत्र	११३४
परोदयनप्यमानवक्ति	72-74
<b>पापगुत्र</b>	<b>११-२</b> २
पार्र्यम्बमुनिनि-इ	36.24
पर्दिग्रहपुक्तिरात्रवयसम्ब	११-८=
मनागन्द्रितासिद्धिनिमित्त सद्भित्र	35-48
मोहनावरशमनस्यम्यान प्रकृति	₹1-1€
युद्रमयनारण मंत्र	1980
स्ट	118
<b>य्यामायनामादिनिमित्तत्रादिमंत्र</b>	11-y0
६शा प्रारीम इन्द्रकविल	11-12
निक्रिया श्राद्धि	11-=
नियुक्त यो नर श्राद्धिमंत्र	11 32
श्राप्यकी प्रतिमा	18 2
न्यानविषनि <b>वारव</b> न्यद्विमय	11-30
,शतु य गिरपीड़ा निवारक श्रादिमंत्र	११-२७
न्शत्रु श्राराधनास द्यानिया यारव	35-51
श्रुम्तिमनिनिम्स	18 ys
शिगरा, पर्वेतपर सूट	** \$8
शिर पीडा वारक ऋदिमंत्र	११ ३६

[ 58 ]

[ 54 ]	
ममार्विज्यमीमाग्यनिमित्तकः महद्भिः प्र	११-३३
<b>ममत्रमर</b> णभूमि	98-9
सर्पभवतारकमञ	११ ४४
सप्रिपद्रीपर्णऋदिमत्र	११-४६
सर्व वेपनिपारस्य न मर्पसीलस्यादिमन	११-२६
मर्पारारोरोगत्रारवश्चद्धिः त्र	११-३=
<b>विद्वविभेषस्त्रानप्रकार</b>	52-23
हिम्यान पर्वत पर घृट	११-१३
हत्वाभाम	33-30
चेत्रमापपशार	998
धितपागदो	15-68
धग	१० ६
थयोगिगुणुस्थानमवध पुच्छितप्रहृति	36-66
थयोगरेवलीमें उद्ययोग्यप्रकृति	१२-३१
<b>य</b> िरति	१२-७
थाहानेच्छापूरक	१२ ३७
उपयोग	, १२ १०
क्र्यभृमितपञ्चेन्द्रियके जीवसमास	१२ १६
<b>क</b> म्पेन्द्र	શ્ર-પ્ર
चत्रपर्वी	१२ २
चारित्रमोहनीयकी सर्वेचाति	१२६

r

		**		[	# ł	1
र्ज वसमास	, -	-	7 ,5	tiş.t		
जीत्रसमाम					१२	२३
**					१२	રષ્ટ
तन्त्रनिमित्तक ऋदिः	पत			,		₹0
तपके श्वतिचार						१४६
द्वादगाचर संत्रवर्ष						१३१
"				ŧ"	१३	१ ३३
**			,		: १३	
द्वेप प्रकृति					१३	१४३
प्रसिद्धमहापुरुष						१२ =
पिशाचादि भगग				-	11, 62	१४०
मयनित्रास्क राजधा	ननिमि	तक ऋ	द्धिः त्र			ર્કેષ્ટર
माना					٠ (	१२ ४
भात्री उत्सर्पिणीमें न	वश्र वर्ती				१ः	२-१≈
ेभोगभूमिज्ञ पङ्चेनि	द्रयतिय	श्चिजी	वसमाम्		ξ:	२-२६
मत्स्यपाशद्रीकरण	ऋद्वि	4.7	•			२-३६
मतिशानके विषय						ऱ-ऱ् १
मोहनोयनग्रमोदयः	सत्वस्थ	ान प्रकृति	ति		٤:	१ रे ५
यव्						२-१७
राशि						२ ३ १
ब्दतर विशेष					१ः	2-85

[ = ]	
<sup>१</sup> रकाके गुण	१२२=
<sup>1</sup> ृबारन	१२-१३
िश्रावर के प्रत	१२-१
,गत्रव्याधिमयनिवारकारिनिनित्त ऋदिमत्र	१२-३८
<sup>1</sup> स्वाप्यरमे	१२-३५
<sup>र</sup> स्त्रमातपर्याय	१२-२७
<sup>1</sup> मनगविकारी श्राप्तक •	१२-४४
<sup>le मायम्तार्थ ४= मुनियों के काय</sup>	१२-३०
रिप् मनामिम	85-58
सम्परन्तके अभावका उद्यो नियम है	१२ ४५
<sup>174</sup> ममुद्रमयबारक ऋद्भिम् त्र	१२ ४२
रिः सावयवचन	१२-२६
<sup>(१)</sup> मनन्तानुबन्धी क्याय	१३-३१
<sup>१२</sup> अत्रत्यार यानापरणीय	१३ ३२~
<sup>१९</sup> श्रयोगिमिचरपसमयमें सत्त्वव्युिद्धः प्रशृति	१३-४
<sup>१२३६</sup> श्रयोगकेन्त्रीमें भाग	१३ १५
१२ ११ उद्देलन प्रकृति	१३ ४
१२ २५, एकान्तमत	ा, १३ ७
१२१  गर्भस्तमनगर्मीयतननिमित्तमन्त्र	१३ २४,
। द्यारिशक श्रङ्ग	१३-१३
१२१८ जीन समाम	१३ ⊏

	1 == 1
तद्व यतिरिक्तनो यागमद्रव्यकृति	93 20 2
तेरह यत्तर वाले मन्द्र	१३-१६ -
17	१३ १७ :
11	१३-१=
"	१३-१६
**	ॅ१३ २०
दुर्जनवर्गीवरण जिह्नास्तंभननिभित्त मन्त्र	१३ २७
द्भिंचादिभयनारवमन्त्र	१३ २४
धम्मापृधीमें इन्द्रवित्त	१३३
नामप्रर्मके सत्वस्थान	र्१३६
निर्यापक्के गुण	१३-१४
प्रत्यार याना नरसीय	१३-३३
प्रतिरादीशरुभयकारकमन्त्र 💎	१३-२२
मनुष्य जीनममास	१३-१२
मोहनीय की देशघाती श्रकृति	१३-२
मोहनीयचतुर्थव धस्थानप्रकृति	. १३-६
"	१३ १०
मोहनीयश्रष्टमसत्त्रम्थानप्रकृति	१३ ११
रागप्रकृति	१३ २६
निद्यामत्र	१३ २१
विपमज्वरवारकमत्र	83-83

[ 48 ]	
श्रावक	
्मज्ञलन	३ ४ ६
सम्पत्ति लाभ निमित्तक स्त्र	ય १०
साधुचरित	५-२४
, अङ्गबाब्ध त	१५⊏
<sup>'</sup> श्रध्यातमेत्रान्त	१५ १
ध्यासनम्बनिके चिह्न	४-१ <i>७</i>
भाष्रायणीपूर्वके अविकासम्	<b>ク</b> メーシ
्र्याम्यतर परिप्रह	ંગ્ય દ્
<b>इ</b> चेरर	ט עי
<b>रु</b> लगरवार्ये :	પ્ર ૨
गृहस्यकं लच्च	२०
गुणस्थान	२४
चम्मतीके रल	4-63
चतुर्दशाचरमञ	८५ २२
11 	१५-१६
<b>जीवसमाम</b>	१४ २१
r <sub>t</sub>	<b>૧</b> મુન્ટેન્
A F B	१४-२३
्रेन्स बन्द	
उ <sub>न्</sub> नीमदम्हाँ े	
, * 1	

	( to ]
परमञ्जमरणादिनिमित्तरमञ्	१४३२
<b>पि</b> साच	१४२०
पूर्वे	<b>१</b> ४-४
मयरोगोपसर्गनारफप्रवापनारम ऋद्विमंत्र	१४ ३३
मोगभूमिजमहिलाके व्यामरण	१४-२६
भोजन मल	१४-१६
महानदी	<b>\$</b> 8- <b>\$</b> 8
मार्गेषा	१४-६
मोहनीयदेशधातीप्रहति	१४७
मोहनीयसर्वधातीयकृति	१८ =
नि्धा	१४-१७
श्रोता	१४-१२
स्वर्गरासियोंकै सुद्ध्य चिद्व	१४-१६
समोगकेनलीमें भाव	१४ २⊏
सर्वापद्रवनाश्चरः मन्य	१४-३१
ज्ञानमात्रात्मनिस्याद्विसद्धमुख्यधर्म	१४ २३
उदररोगनारक ऋदिमन्त्र	१५-१⊏
कपीत लेरयाके चिन्ह कर्म भृमि	१५ १६
वस स्था	१४-११
कार्तके स्वमात्र रेडेंट	१४-१२
्रैप्रेंवर्म	१४ ४

1 11 1 बीवसमाञ्च १५-६ \* १म १० दिनक मुहुर्त 84-58 दशस्यत गुणस्थानमें व्युव्छितयाश्रव १५ ८ श्मार 9 2 8 पथरशावरमन्त्र १४-१७ मध्यम नत्त्र 24-X मध्यमनवत्राधिदेवता १५-६ मोहनीयसन्त्रस्यानत्रकृति १५ ७ योग १५-२. राजमान्यवानिभित्तक श्वद्विमैत १५ २० रात्रिके सुदुर्व १५-२५ १४-१३ श्रवसुके धन्तराय शतुबद्यीवरण शस्त्रनिष्यलीवरण मंत्र १५-२२ -1771 84-88 धत्रस्तभननिभित्तक प्रदि मन सप्रहिणी ब्यादि पीडानिवारक ऋदिंमप्र my & 84-58

सम्यग्द्रष्टिके उ॰ र्गुल १४ २३ संयुक्त भरीर हिसा प्रयोगिकिया , **२ ५-**१५

धपक योग्य धमतिका श्रविनगणमार् गण

		<b>ξ</b> ξ ]
पर्श्वत्यके स्वभाव		१६ २१
मनिम्तिमरणगुणस्थानमे श्राक्षम		१६-३०
धाराशहब्यके स्वभाव		१ <b>६-</b> २२
उत्पादन दोप		14.7
उत्मदोप		
शिया		१६-२
रज्योपपन	1	१६-२=
क्पाय		१६-५
ऱ्य <b>उलगिरिपर</b> हुट		१६-६
इएटलगिरि कृटाधीशहेषु		१६-२६
वर पृथ्वीके माग		१६-२७
पन्द्रगुप्तके स्वप्न		१६-१०
चात्रसमास जीनसमास		१६-३५
भागतमास		१६-१⊏
तीर्थे रस्त्वभावना		१६-१६
तीर्थ करकी माताके स्वष्त		१६-१
हर्व्यक विशे <b>ष गुस</b>		१६-८
प्रगडिन्यके स्वमाद	-,	१६-२३
पण्डण्यक स्थमाय नन्यनगापिका		१६ँ२०
प्रसिद्ध <b>सती</b>		१६,११
भरत चत्रवृतीकै स्थप्त	15	₹ <i>६५७</i>
पान प्रमुखाक स्थप्त	•	95-39

i[ {\$ ]	
मती उन्सरियोमिं कुलकर	१६-१२
भोगभृभितमतुत्योका आभरख	१६-२६
मम्प्रपाशहरीवरण मन	१६ ३२
नि यात्मणस्थानमे वधाव्यच्छित्तप्रकृति	१६-१३
नि यारम्युणस्थानमे वधन्युच्छिन्प्रमृति योगुर्गार्थया	१६-१७
नोगानिक देव सोगानिक देव	१६-⊏
लौरान्तिकदेव ृयन्तर देवोंके इन्द्र	१६ ३७
तेपार पंपास इन्ड नेपार पंपास स्मा	१६ २४
કર્યા સ્તા	१६ ४
 सर	१६-२४
नं <del>र</del> हार	१६ ३६
परम् साम्परायम २घट५ व्ळिनप्रकृति	१६ १४
सोलाई व्यवस् वाला भन	१६-३१
हिंसा विसा	१६-३≂
<sup>१९२६</sup> दीणमोद्दमें उदयव्युन्छित्र प्रकृति	१६-१५
चीणमोहमं मस्त्रव्युच्छित्र प्रकृति	१६,–१६
श्रविर्नसम्यक्तमें उदयव्युच्छित्र प्रकृति	₹'0-3
क्पायवेदनीयाश्रम हेत	80-⊏
जीन समास	\$12-J.
पञ्चेन्द्रियके गुणस्थान	27-34
भूपके	250m
1(11:23	

1

---

į

	_
	[ 8]
मनुष्यकं गुगस्थान	ેં <b>૧૭</b> ૧૦
मरण	१७ ७!
मोहनीयसप्तदशस्यांचस्थान प्रकृति	<sup>;</sup> १७-५
" "	१७-६
श्राप्तक के नित्यनियम	ઁ ૧૭-૨
सयम	१७१
ध्रूममाम्परायमे वधयोग्य प्रकृति	ૈરળ દે
थशहन	' १≂-१७
जीवसमास	१= =
"	१≂ ६
"	१⊏१०
दलभे खि	१ <i>≂ ७</i>
द्यान्ताभास	१८-१८
दोप	रे≂प्र
निपीधिका लच्च	१≃ १२
पञ्चेन्द्रियतिर्पग्जीय समास	१≂-४
पाप	१ँ⊏-६
लिपि "	१≂-१३
"	१⊏ १४
	<b>१</b> ≂-॑१५
लेग्या है श्रज	0

[ (tk ]		
🕒 व्याधिरानुगयनिवारख श्रीप्रापक मत्र		१८-१६
् इदि ऋदि विकास		१⊏३
ें बैदन याथव हेतु		१⊏-१
, चायोपशमिक भाव		१८-२
, गर्मस्तमतगर्भापतन निमित्तमत्र		8-38
, बान समास		१६-१
, बीरक शयक		१६-५
्री स्थानासरखाश्रवहेतु		१६२
, प्रिर्थारप्ट यंगपीडावारक ऋदिभन		\$ 39
्री इसकोपजन्य व्याधि		२०८
्र इण्डलिगिरियर कुट		२०-३
· ·		₹0-€
, । सीर समाम		₹०-७
्र, 'धुएयपापामयप्रकृति		२०-११
, ग्यनगामयाक इन्द्र		२०-१४
मनरी शुद्धिके बारण	•	२०-१३
ुर्विदेहिविद्यमान सीर्थप्रर	•	२०-६
<sup>(-)</sup> शतको उत्तमगुण		२०-२
१३ थ तज्ञान		२०१
१ समवसरणरचनावस्त		२०-४
भे संगवशारणस्थना माग		२०-५
1.		

	<sup>1</sup> [	ŧξ ]
सत्ति श्रीमोगायविजयतुद्धिलामरा मत्र	, ,	२०१२
चीणमोहमें भार	, 1	२०-१०
उपगान्त मोहमें भाग		२१ ह
<b>ग्रीद्</b> षिक्मात		२१२
चारित्रमोह चपलाके श्रवसरमें करण	1	२१-१३
जीनसभास	ŧ	2 6-3
निग्रहस्थानके भेद	. '	२१-१२
मोहनीयभीएकविशतिमधस्थानभी प्रकृति	à _,	288
"		58 8
n	•	२१६
"		581
मोहनीयसप्तमसच्यस्थानप्रकृति		२१:
बदिग्रहमुक्तिराजमयवारकः त्र		₹₹-₹
सर्वेवाती प्रकृति		્ર ૨૧
संग्रहिंखी त्र्यादि निरारकम्त्र		२१-१
श्वनिर्वात्तरसमें बधयोग्य प्रकृति	٠.	२१-१
श्रप्रमृत्तिरतमें श्राश्रव	1,	२२-१
श्रपूर्वेश्ररणमे श्राश्रत		52-6
े श्राह्वेनीयेच्छापूरकमत्र		' २२ १
जीर्यसमास	J F	२२
परीयहजय '	ls 's	र्ग <sup>१</sup> २ <sup>१</sup> २

्रेग्डेंम् यदस्या मंत्र २२-१४ " रा विद्यामन २२-१६ ्राप्यान्य मोहनीयद्वार्विशतिबन्धस्थान् अकृति 22-3 न पर्न जिस समार्थि ⇒२-४ ~5 D\_Y ्र साम्भी है सम्मानिका २२६ वर्या स्मितिका क्षा विद्यास **,**२२-७ !"। "। म रिडामिल क्वाता । र `२२-≍ मोहनीयपष्टसस्यस्यान प्रकृति २२६ एवं घवर्गणा मृह्मसांम्परायमें भाग **प**ण्यातीत नेवीम खंबर वाला मत्र मौर्हनीर्यपन्चसत्वस्थान् प्रकृति वर्गणा विषमज्वेरवारक मैत्र र्श्रप्रायणी पूर्वके चयन <sup>हि</sup>न्धिके . धर्याधिकार उत्तरमञ्जति स्थितिरंथके श्रवुयोगद्वार एकेंग्रोतर प्रकृति-धके अनुयोगद्वार २४-२० कामदेव

गतचतुर्थकालमें तीर	इंग			
47.50	भै पिन्ह	. 1	5	
39-0,	'		+ 1	
^`~ <u>"</u>				
,	, माता		ž	
, , , , , , , , , , , , , , , , , , ,	• • पूर्वे द	तीय मत्र	नाम	
<b>7</b> ,	' "पुरेस्	तीय मर 1	पेताकेन	
<b>7</b> 1	° * पूर्वेबा	म स्वर्गवि	मान	
	• » समी	स्य यच		
* ,		के समीप <b>र</b>	<del></del>	f.
				11
चीवीस व्यवस्या ऋ	द्धि मन्न	ि भ		<b>3</b> }
जातिके द्पणामास				
<b>जी</b> नसमास		ìi	Li,	- <b>२</b> ६
प्रमत्तविस्तमें श्राश्र	_			२४
		7	*	२४
भागी उत्सर्विखीमें तं भागी उत्सर्विखीमें तं	थिङ्कर	- 6	17	₹8-`
मात्रा उत्सर्पिखीमें ह	ोर्थेइरोंके प्	र्ग नृतीय	मननाम	રષ્ટ
भूतोत्सर्पिखीम् तीये मोहनीयचतुर्यमन्तर	<b>∑</b> ₹			२४ १
मोहनीयचतुर्थमन्त्रस्	यान प्रकृति			, <b>२</b> ४-°
		E		} <b>`</b> ₹¥-₄
उच्चैगींत्राभवहेतु			1	5
उपाध्यायके सर्वगुर	1 [			30.00
क्पाय			-	२५-१०
				२५-२

[ <b>ધ</b>	
चारित्रमोहनीयप्रकृति ^	ै २५-१
<b>नीचैगत्राश्रवहेतु</b>	- २५-⊏
पत्तीस ऋदर वाला मत	- २५-११
वर्गादर	२५-५
विकथा	च्र्य-१्२
सम्यक्त्वदोष	- २५-६
सासादनमें वंघव्युच्छिन्न प्रकृति	૨૫-३
<b>शनीवरखाश्रवहेतु</b>	২૫ ৩
रपाय मार्गिणा	२६-२
गजमदवारख निमिचपंत्र	न्न , २६-≔
बीत्रसमास	ғ, , <del>२</del> ६-३
देशपादी प्रकृति .	7-1 : F 28 8
मनु पायुराश्रवहेतु	ने  ा २६-४
मोहनीय तृतीय सन्त्रस्थान प्रकृति	- "२६४
श्रुस्तमन निमित्त मन	् , ग्राहरू
सर्वेशिरोरोग वारख निमित्त मत्र	, Pi, P. P. P.
संस्कार	Tor 1*250"
Mitatitions	1 1 1 1 1 1 1 1 7 4 4 - 4"
इन्द्रिय विषय	,२७-१
चौरमयनियारणनिमिच मंत्र	77 <b>२७-</b> =
जीनसमास	२७-५

-

	; {e2 }
	ລາດ ເຊື່
नवा	70,4 F FF 34.6
मोटन य द्वितीय सच्चम्थान प्रकृति	70 1/L
योग (न्योतिपसम्बन्धी)	8-0gl44 T
स्त्रोदयबध्यमान प्रकृति	१ . १६ १६ १६ १६ १
सदाविषात्यचरमय	ર્વેજના
र्थानरचित्ररणमें मार	रंद = '
अपूर्वकरणमें भाव	1,42.0
जो नसमास	_}
नचर	ग 7   दिं€-थ
नामकर्मकी अपिएड प्रकृति	T 1 8 = 18'
वेतराधारारण निमित्त मन	नानीली क्यून्स
भोहनीय कर्मकी प्रकृति	127-3
	गिन्देंहर्
मोहनीय प्रथम सन्त्रस्थान प्रकृति	
शतुरतमन निमित्त मत्र	11 22-80
साधुके मृत्युण 🕠 🔀	्र मिं दिद−ई <u>'</u>
मुपिर जातिके प्रसिद्ध बाजे जो त	विर्यद्भरके जन्मीत्सरमें वी
द्वारा वजाये जाने हैं 🗀	119717576-88
विर्यग <b>्यराश्रमहेतु</b>	<b>રદ−ર</b> ૈ
धपकी बजाये जाने वाले वाजे	
वजाये गये	માં વાવજૂરવા અનાવાર્યા. કેન્ફ્રેન્ફ
	11 -1-1111287
रत्नत्रयके श्रम	11.1-1.11.156-6
	11

	1 tet 1:	
	रर्मभूमित्रतिर्पेश्चके जीवसमाम	ह. ३०%
	बा <b>रसमाम</b>	, , ३०२,
	11 -4	ं- ३०३
	सपोगकेमलीमें उदयब्युच्डिय प्रकृति	ते १ ३०-१
	सुमाग भूमि	<sub>६</sub> ३६-४
	व्यवस्वविरतम साव हुन हो।	, ू - ३१४
	एक्जिंगदद्वर मन	,३१-६
ì	दशसयतमें मात्र	~ <sub>₹</sub> ३१३
ŧ	प्रमृतिरागमें भाग	+
	पुग्रह घोदयञ्जुच्छित्र प्रकृति	- 14 38 8 p
	रान्यवान्यत्व सीमान्यनिमित्त मंड	- صلم ؛ غالاس. - ما الله الله الله الله الله الله الله ا
	शुनस्त्रप •	_ f
-	सींपर्भ प्रामकल्पेन्द्रक विमान	, 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1
,	बायोत्सर्ग दोय	
i	<b>बीरममाम</b>	\$ 2-3
	निरंतर्व्यपमान प्रकृति	₹₹₹
	भोजनित्राप	, 35-50 , 35-50 , 35-50
	व्यवहारम् आये हुए शिन्पीकार	` <del>22.</del> 70
•	र्वदन्।द्वीर्प -	\$2.4
	विद्या-त्र ु	32-6
t	सम्यद्भिभेष्यात्त्रमे भाग	,32 <u>=</u> ,4

	[ १०२ ]
सासादनेषे भाग	ૈ રૂરં ૭
	"३२ १
सान्तरवयमान प्रकृति	રે રે
जीरममाम	
तंत्रनिमित्त मत्र	' <b>1 3</b> 3 8
नरकायुराश्रमहेतु	<sup>१</sup> ३३-ृर
सर्पतिपनारम्य व कीलर्गनिमित्त	र मननार्ष र भार वृत्य
	, 777V 387,
जीर मयप्म	ા રહેર
बधापमरणस्थान	
मिध्यात्वमं मात्र	म । इंडड
सान्तरवंधिनी प्रकृति	7 4" 1 <b>38 8</b>
समोरार मतके श्वसर	, i 1 2 1 3/4-6
पिशाचदिवारखनिमित्त मंत्र	वर्ष ३५२
भयरोगोपसर्गनिशस्य निमि	ज्ञाम ुन्देश्री
श्रनिष्टतिररणमें सत्त्वव्युच्हि	eauca .'''₹₹१
श्रविरत सम्यक्त्वमें भाव	36-0
श्राचार्यके मलगण	, , , , , , , , , , , , , , , , , , ,
थाचायके गुण	- 24-6
11 7	मारा रें हैं हैं।
L99 C	३६ १
जीवसमास	* * * * * * * * * * * * * * * * * * *
सीपसमास	4 1 1 1 3E

[ [6] ]	u \ ~~
निगोदके कारण	₹-१२
प्रविद्याय भीका परिवर्ष	1 <sub>05</sub> 134.8
श्रुष्तीकाय राग जो इन्द्रने वीर्थकरके जन्मपर गाये	३६-११
वाभवावर मार	३६ ६
भग्रुभनामरगर्माश्रव हेतु	<sub>⊱</sub> ३७-१
दर्शतंत्रवगुलस्थानमें व्याभन	३७-२
शत्राराधनहानिशारण निमित्त मंत्रवर्ण	_ <b>३७,३</b>
जीइममास	, <u>\$</u> =-8
६र्बनागीररणजिह्नस्तम्भननिर्मित मंत्रादर	३⊏-३
सर्गारिशङ्ग पीड्रा वारणनिमित्त मत्रावर	्र, ३⊏-२
कायग्रप्तिके श्रतिधार	े ३६३
<b>बीवसमास</b>	, ३६-१
व्यवसायलामसौरव्यविजय निमिन्त मंत्रादर	7-38
<sup>चित्वारिशदचरद्विमंत्र</sup> '	L , 18 80-87
पितकोपनरोज -	۶, ۱۹۰۶
भारतमें ब्राझी निस्तिलिपि	<sub>त. 1,</sub> ४०३
राजा (जो प्रजोका पालन वरें) के गुण्	1 tr 80-8
समाध्यर्थज्ञेयवस्तु -	1, 11,180.18
जीवपद (नामकर्मोदयस्थानके)	, , ४१ १
सान्तिपातिक मान	<sub>ं ,</sub> ,४१-२
जी <u>उ</u> समास	1 -1 -85-6

इभिवादिभय बारणनिमित्त भन्नाचर सयोग कवलीमें उदय योग्य प्रकृति मिश्रगुणस्थानम श्राश्रय रात्रमान्यतानिमित्तकत्राचर शभनीमस्मीश्रम हेत ध्यन्तर,याश्रम हेतु , केंग्राही समुद्रभयवारणनिर्मित्तं मन्त्राद्यर मर्पेरिक्टीस्सा विधिन प्रकानर जींग्रममास गाः हीतः ह ष्मिरित सम्यक्त गुलस्थानमें आश्रव थाहार दोप वीर्थेरर धर्दन्तके मृलगुण <sup>-</sup> धनलामनिमित्तमन्त्राचर सर्रभयवारणरानद्वाराधन लाम निमिन्तम्न्त्राव्हर ध्रिपंचंची प्रकृति सर्वमयपारण निर्मित्त मन्त्राचर द्यानमात्रात्मारी प्रसिद्ध शक्ति केश्ल प्रयय प्रकृति जीवसमास दीवी वय क्रिया

[ tox ]
मितिनानके मेद
सम्यादृष्टिके मूलगुण । ४=-४
थानी बनाकरपमह
उदररोग बारण निमित्त मन्त्राचर 🔭 💛 ४६-४
प्रत्याख्यान बन्यमञ्ज
व्यविक्रमण वन्यमङ्ग े १८-१
युद्धभेषवारण निमित्त मत्राचर 📩 📑 '४०'४'
वित्रयार्धदिवस्थे सिनगर ५०-१
सम्यक्त्वके मल
सामादैनमें थाभन ५०-२
बीयसमाम ' ' ४१-१
सर्वसंक्रमण प्रकृति प्र-१
रकर्मन्वय किया
जीनके मान पूर्व-१
आप्रकरी क्रियायें ' ' ५५३-२
जीउममास ५४८-२
।नरन्तर ध्या प्रकृति ५० ६
व्याश्रम जीवसमास विकास महत्रहर १५% १५७-१
भारतगात " २०-६

102 1 नामर्रापञ्चमसत्त्रम्थान प्रमृति 🧵 == 8 ज्यदर्भ चतुर्थमच्चस्यान प्रकृति 8-03 न पदमें सुतीयमचस्थान प्रमृति हत् 8-83 ६२-१ न्दन्दर्भ दिवीयसचस्थान प्रकृति -. €₹-१ नामकर्मकी प्रकृति ६३-२ न्दमञ्जनसम्बन्धान् प्रकृति । सम्बद्धीवनुमास-- 🔐 😙 ६= १-१००-२ 8-0-8 **ुक्तमानमे उदय<sub>व</sub> योग्य प्रकृति -१००३** E-308- min miles 508-3 m १ 9.8-85. "धंनलाभा सर्वभयनार्द धनर्मधी प्रकृत सर्वमयवारम् । द्यानमात्रात्माकी क्र केशल पुराय प्रकृति बीयसमास ∢ क्रिया

	१०१-३६
1.0.4	१०१ ४३,
<sup>श्रीपूर्वे</sup> स्द्रकथं विवद्धविल	१०१-१५
श्रे विषद्भिल	१०१ १७
श्रीति सम्यक्तमे उदय योग्य प्रकृति	१०१-५४
, "सच योग्य प्रकृति	१०१-२=
अरेरानिश्चिकरणमें भाग प्रमार	१०१-७
48 ·	38-908
धरोती े	-१०१-४६
<sup>उ</sup> ष्णान्तमो इद्वितीयोषशामसम्यक्तमें सत्त्रयोग्यप्रकृ	বি१०१-३७
" चार्यिक सम्यम्यक्रानं सर्	१०१४०
कियानादियोक हुनाद	१०१-१४
	१०१-२
नारा भरत चेत्रमें	૧૦,૧-,੪=
देन बीरसंगास	१०१-४,
देशसंपतमें सुन्तयोग्य प्रकृति कार्य, क	१०१–३०
नामकर्मेके ध्रक्यतस्य धर्मम्	36636
नुमानकोके २६ प्रकृत्युदयस्थानम्ग मान	१०१-१२
निर्मानानिष्टविररणम भाव प्रकार है - हिन	3 808
निर्मापानिष्टतिकर्णम मान प्रकार-, क्र	१०१-१०
	१०१-३२

;	<b>₹</b> §
द्रमत्तिरतवायित्रसम्यग्द्रष्टिम सन्द्रशोरयं प्रकृतिः	
पाप	80,
पूर्वीकी वस्तवे	१०१ ू
मिध्यात्वरे वैधयोग्य प्रकृति	१०१
* उदयोग्य प्रकृति	808-1
" सन्त योग्य प्रकृति	१०१ र
मिश्रमें सन्त योग्य प्रकृति	१०१-२
विविधा	808-813
सर्व जीवसमाम	8 = 8-13
सर्वेदानिष्टत्तिररणमें भार प्रशार	१०१६
सासादनमे उदय योग्य प्रकृति	१०१-२३
<ul> <li>वध्योग्य प्रकृति</li> </ul>	१०१-२१
" सत्वयोग्य प्रकृति	१०१-२६
<b>ध</b> त्तमसाम्परायउपरामकद्वितीयोपश्मसम्यक्त्वर्मे	सत्वयोग्यप्रक
•	१०१३६
" शायिवसम्यक्तवर्मेसच्चयोग्यप्रक	ति <sup>हि</sup> ० १-४१
स्दम साम्परायचपरमें सत्त्रयोग्य प्रकृति	१०१-४४
सुदमसाम्परायमे मानप्रकार	808-80
सूदमसाम्पराय सयमी	१०१-१६
श्वायिक सम्यक्त्वमे सत्त्रयोग्य प्रदृति	१०१-२६
स्वायिकसंस्थादष्टिशस्थातमे <sup>भ</sup> सस्ययोग्य प्रकृ	
diliator selection distant Shi	

[[111]	
रहमोद संत्रपोग्य	ू १०१ ४५
श्रन्याप्तृतिहान्तिहद्द	् १०२ ११०
भागगित इतक सामानिक	१०२-६५
मन्तारन रंद्रके सामोनिक	105-08
४५नाम् ,मस्यात्रपाजनकं जिल	१०२-३२
म्प्रपदिरास्य मात्रप्रकार	१०२ =
मीनज्यति (इक सामानिक	१०२ ६४
भेषत्राहत इन्द्रक सामानिक	१०३-७३
भगाग सोमान्तिस्दर	१०२-११५
मनित्व सम्यक्त्वमे भावप्रशाद	् <sub>,</sub> १०२-५
भारि सीकान्तिकदेव	१०२-११६
<b>प्र</b> यतौकान्तिकदेव	१०२-१२६
अनुगन्द्र सेनाफे पहिली क्वाके माहिप	,१०२-१४२
शवाराह्ममें पद	१०२-१३२
श्रान्मरिक लीरान्तिक	१०२-१२५
भादित्य लीकान्तिक	,- ; \$02-80E
उपशमश्रे शिके गुणस्यानीमे संयमी	
1,01	
कामधर लोकान्तिक	१०२-१२२
ग्रहवाहरूदेव	-, -, 605 580
गर्दवीय लीफ्रान्तिक्देव	, ४,१०२-११२

	[ 145 ]
घोप इन्द्रके सामानिक	ूँ १ <sub>०</sub> १६२
चत्राके म्लेच्यराजा	7 1908-61
" गुरुटेबद्धराजा	लोगा १०२ हर
" नाव्यशाला	174 . 603 83
" संगीतरााला <sup>'</sup>	83 Fob 11 - 11
* देश	ं, ।, १०२६५
" नगर	. δο≥ ε∉
» खेट	12 260
<b>≖ क</b> र्बट	ع - ي الم
" मटम्ब	33908 11 17 1141
'" पट्टन	३ १०२१००
° द्रोगमुख	१०२-१०१
" सेगूदल । "	~~ 1 313 + \$02-\$08
» दुर्ग	* १०२ १०३
» पुत्रती	1, 803-608
" स्त्रीमे रात्रक्त्या	, १०२–१०४
" " विद्याघर बन्या	},~ 1; 11 1202-90E
" " म्लेच्छ वन्या	* १०२-१० <b>७</b>
चन्द्रबाहरूदेव	क्षा निश्वेर-विश्वेष
चन्द्राभ लीकान्तिक देव	र्वे ३– <sub>११</sub> ७
चगरन्द्रके सामानिक	र्नार्न <b>्र०२-३</b> ४

[ <b>१</b> १३		
चमरेन्द्रके	श्रादिमपरिषद -	१०२-३६
. 7	मध्यमपरिषद	
	बाह्य परिपद	१०२-३७
7 29		१०२-३⊏
	प्रत्यम् परिवार देवी	१०२-३६
, m	सर्वपरिवारदेती	१०२-४०
<b>&gt;</b> ,	वन्समा	१०२-४१
79	सर्वदवी	•
ŧ	समानिवासी	१०२४२
Ħ	जलप्रमके सामानिक	१०२-१५५
7	जलनक सामानिक	१०२ ६१
	जलरान्तके सामानिक	~ १०२-७ <b>०</b>
	वारकाबाहकदेव	१०२-१४६
तुषित लौका	न्त्र देव	१०२ ११४
दिगन्तरविव	सीशन्ति∓ः,	
देशसयतमें भा	रत्रकार .	१०२ १२४
धम्मा पृथ्वीमे	रन्द्रकथे णिवद्धवित्त	ँ ११२- <b>६</b>
- ग केव	त्राचा चन्द्रावल ल श्रीवाबद्दविल ू	१०२-२४
धरणानद इन्द्र	त नावादावल ।	१०२२⊏
7	(श सामा।नक , ु	१०२ ६७
41	<b>पन्लमादि</b>	१०२ ८३
नवत्रमहरूदेव		१०२ १४=
नामकमके ४धे	गुणस्थानमें भुजाशारवधमग	१०२-१६
" २≂	प्रकृत्युद्यस्थानं भग	
		१०२-२०

					ŗ	र्१४४	]
रामकर्मके	২६ সকুর	पुद्यस्थान	मेंग '	, .	٠ ۽	ة <b>ج</b> ة	११
r 17	३०	#		7	:	-۶۰۶	१२
~~ n	३१	77	•		,	02-	₹
निर्माणर	न लौकानि	तक			१	• <b>२</b> -१ः	3
	) वल्लमा	व देवी			;	१०२ः	:0
प्रथमानुर्य	ोगमें पद		7		8	०२ १	ŞЧ
	(न्द्रके साम		1	li	:	१०२-।	94
प्रमत्तविर	तमे भाग	कार	4			१०३	O
त्रमाद		~- }		Ţ		१०२	\$
	वेशुद्धिसंय	मी '	1	•	8	०२ १	₹ १
पूर्वेकि प्र			1	:1	8	02-8	ર⊏
-	मक लीका				•	o 5 - §.	-
मत्रनत्रा	-	न्द्रकी पहिल	_		8	•े <b>२</b> १	ųξ
20		इद्रभीप्रत्ये		**	٠.	०३२१	
भृतानन्द		मानिक 🕕		<b>+</b> -	117	१०७-	५१
*		देमपरिपद		} ,	- :	१०५-	યર
		गमपरिपद		ĭ		१% ই-	<b>ष</b> ३
7		परिषद		<b>~</b> , ·		१०२-	
~ я	_	ग्रपरिवारदे			Ŧ	१२३	
7		परिवारदेवी	; ;			१०२	
27	वर	समा '	,	-,		१०२	ьķ

भृवानन्द इंद्रके सर्वदेव		१०२-५=
भगतवासिके १७ इन्द्रे	र्विके ∤ष्यादिमपरिपद	१०२ ७६
- P	<sup>-</sup> मध्यमपरिषद	१०२-७७
, " #	,वाद्यपरिषद	१०२७=
Z -#	प्रत्यप्रपरिवारदेवी	३०२ ७६
¬ 5	सर्रेपरिवारदेवी	१०२-८०
ħ	वन्सभा	१०२ =१
~ · #	सर्वदेवी ।	१०२-⊏२
<b>म</b> वदीम सप्त्यात योज	न विस्तृत बिल	१०२३३
" त्थमपृख्यात	7 7 2	१०,२-३४
मृहत लौकान्तिकदेव		१०२-१२७
महाघोष इंद्रके सामानि		१०२ ७१
मिश्र्यात्वमे भावप्रकार	τ	१०२-२
मिश्रमे भारप्रकार	15	,१०२-४
सेपापृथ्वीमे इद्रक श्रो		१०२-२६
	" Trye'r r	१०२ ३०
मोहनीयके उदयस्थान	र्मग <sub>नि</sub> ,	१०२ ह
म्हिनीयके ट्रयके स	र्वविध अकृति अमाय-	१०२-१०
मोहनीयके योगके था	थय स्थानुम्गंग - 😗	१०२ ११
23 ¢ e "	" प्रकृतिप्रमाख . ,	१०२-१३
-*- भयमके आ	श्रय स्थान मग्र	१०२ १३ 🐃
		· · · · · · · · · · · · · · · · · · ·

				E	\$1E	]
π	77	<b>त्रकृति</b> प्रमाय	7	٤ - ١	० २-१	ß
v	स्रेश्य	कियाश्रय स्थ	तमग	१	०२ १	¥
Ħ	77	प्रह	तित्रमाण	8	۶-۶ ه	Ę
n	सम्य	क्त्वके आश्रय	स्थान भग	१	०२-१	9
#	#	प्रकृ	तित्रमाण	8	٥२-१	Z
ल-ध्य	ग्यक्षिको	भव			9-\$E	<b>{</b> Ę
लोकप	लो (भ	बनवानी) की	वम्लभा व	देवी १	०२ ह	0
वशिष्ट	इंद्रके स	<b>गमा</b> कि		*	-7ء	Ęε
पमुली	रान्तिर	देव		<b>१</b>	०२-१	२द
विश्वर	<b>ो</b> गान्तिः	Fदेव		१०	२-१	۰)
<b>वृ</b> पमा	रलीकानि	तक		<b>१</b> =	7-8:	२१
		थ्रे शित्रद्ववित			٠२-	
वंशामे	कनल	n =		:	१०२-	35
		सामानिक		;	१०२	83
वैरो	यन इद्रको	व्यादिम परि			१०२	
	27	मध्यम परि	पद	_	१०२	ВЯ
	77	वाद्य परिपद	L 1	150	१०२	४६
	מ	प्रत्यग्रपरिवा	रदेवी 💛	7	ξοξ-	४७
	5	सर्वपरिवारद	(वी ँ⊦ः	711+	१०२-	
`	77	वन्सभा ।			१०२	
	n	सर्देती	1+7 1	E ~11	१०२	-¥ ≎

...

[ ११७ ]	
वेलुदेवइद्रके सामानिक	१०२ ५६
वेखुवारी इंद्रके सामानिक	१०२-६ ः
वेणुवर्ण्यारी इन्द्रोक प्रत्यग्रव मर्ववरियारदेवी	१०२ ८४
े » भ वल्लमा	१०२ =५
" »	११२ =६
वेलम्ब इन्द्रके सामानिक	१०२ ६६
वैरोचनेन्द्रके समानियामी	१०२-१५६
श्रीयस्कर लीकान्तिकदेव	१०२-११६
शील	१०२ १३७
	१०२-१३४
सत्याभनौकान्तिकदेव का	१०२ ११=
सर्वेनरकोंमें इद्रक्श्रे खिवद्दितिल	१०२ २७
» केवल »।» - ।।	१०२-३१
सर्वरित लोकान्तिक देव उ	१०२-१२६
सामानिको की [भगनगासी] बन्लमा व देवी	१०२ ८८
	११०२-१०७
सासादनम् मात्रप्रकार कि - 10 - सर्पवाहकदेव -	्र १०२-३
	१०२-१४६" १०२-११३"
स्तक्तागमें पद भाग भाग है।	१०२-११ <b>३</b> "
हरीकान्त हेन्द्रके सामानिक	
firm at Viv an inda	305 @5 mm

[ ११८, , 1 +
हिमरान पर्रतपर तारा - , -१००-१५०
हैमरत चेत्रपर तारा १०२-१५१
हरिपेणइन्द्रके सामानिक , -, १०२-६३
चपक्र संख्या । १०२ १४३
n f- 605-588
चपर श्रे शिके गुणस्यानो म सयमी 👚 ,१०२-१४१
n n h ' 605-683
चेमकर लीकान्तिक १०२-१२९
त्रायम्त्रिको [मतनतार्मा] वी वन्त्रमा व देवी १०२-८६०
थग्निहमारो के भन्न र १०३-३२⁼
व्यक्तिगिखी इन्द्रके व्यधिइत मत्रन 😗 づ १०३-४२
- " " तनुरचकः रूप्ति १०३-६६"
श्रम्भिगाहरू वे व्यविकृत भाग 🛂 💤 १०३-५२
े भ त वनुरचेक ार नी ,१०३-७४″
थ्यञ्जनामे प्रतीर्थक्रमिला हा स्वतन १०३-५
ए इ.सुर्गविल - २ , ४,०३ ११-
. व असरपात योजनकेविल भार पार्ट १८२ २२ -
अन्त क्र्यांगृके पद 1१०३ <del>८</del> 15-
श्रमुत्तरोषपादिकदशागके पद र कारी १०३ स्टिम
श्रमितगति इद्रके श्रधिकृत मनन पृष्ट् ३ प्रश्र
च्छ ह <sub>ेर</sub> वनुरवक इ.ते.स म हिन्द्र १९३-६४३

1 888 ]
अमित्राहनके अधिकृत भारत े १०७३-५११
" तनाचक "०४०-४.
आरधान प्रसासिक्त है ।
मवाबल १०३-१०
" सरपातयोजनके जिल ०८३ ७००
" अमेरमातयो ननके बिल कि २००
थरितनीस्ति प्रवाद पूर्वते पद
श्रमुख्रीमार देवो के मजन
शासामार्थिक करेंद्रे कर
2022 mm-2-2-0 0
Triange Architecture
35 Branny -> (04.50E
(04-42
2-2-2
1-77
ैं वतुरवक हार गार १०३ है इस चक्रनिवीरिकाषी
₹०३-७=
* tu
ે પ્રામ દ્વિષ્ટાનું
1. No right 4d
चमरेन्द्रके श्रविकृत मतन
" तत्रस्क
٠

	[ ₹ <b>?</b> + }
चमरेन्द्रके एकैं रसेना	१०३-५५
जम्युद्धीय प्रतिष्ठि पद	१०३-६२
जलरान्तरे ऋधिरत भाग	१०३-४⊏
" वनुरचक	१०३ ७१
जलप्रमके व्यविष्टत भरन	१०३-३=
» तनुरदक	१०३-६२
डीपहुमारो के भवन	, १०३-६७
द्वीपमागर प्रनप्तिने पद	१•३ ६३
ट्रिक्रमारो हे भनन	१०३-३१
धम्मामें प्रकीर्णक विल	१०३ १
"" सर्गत्रिल	· ₹03-0
" " सर्यातयोजन विस्तृतविल	११०३-१४
, " व्यसस्यातयोजन तिस्तृतविल	~~ <b>१०३-१</b> ⊏
धर्मकर्याङ्गके पद	, १०३ ⊏४
धरणानन्दके श्रधिकृत मनन	१०३४४
" " वेतुरचक	ः ,१०३–६⊏
नागकुमारदेवो के मवन	१०३-२४
प्रत्यारयानपूर्वकेषद	१०३–६६
प्रमजनके अधिकृत भवन	₁ १०३—ध३
""तनुर्चक	<b>`१</b> ०३ <u>–७</u> ६
प्ररनव्याकरणांगरे पद	- १० <b>३</b> -⊏६

```
[ १२१ ]
 पूर्णभूननेन्द्रके अधिकतमत्रन
   १०३-३७
          " तनुरचर
   १०३-६१
 न्होन्डके प्रतिमैन्यगज
                                       १०३-१०४
 वैलम्य इन्द्रके अधिकतभान
  १०३ ४३
            तनुरचक
  २०३ ६७
 वैरोपन इन्द्रके श्रधिकृत मान
  १०३ ४४
            वन्रस्वक
  १०३-५६
            एकैंग्रमेना
  १०३ ५७
 भवनपाभीके शेष इन्द्रोंकी एकेक्सेना
  १०३-७७
मतानंदके अधिकृत भवन
  १०३-३५
            तनुरचक
  १०३-५⊏
            एक वसेना
  १०३ ५६
महाघोपके अधिकृतभनन
  १०३-४६
          तन्रस्क
                                       १०३-७२
महेन्द्रक प्रतिमेन्यगन
                                      १०३-१०३
मेघामे प्रतीर्णक विल
   १०३३
        मर्भ निल
  १०३ =
     सख्यात योजन के बिल
                                       १०३-१६
     श्रसख्यात योजन के बिल
यथारयात सयमी
व्याग्याप्रज्ञसियमुके
```

	[ *42 ]
न्याम्याप्रज्ञप्ति दृष्टिवादाधिजारके पट	१०३ ६४
विशष्ट इन्द्रके श्रधिष्टतमान	66-£08
" वनुरचर	- <b>ξ</b> οξ υο
लान्तरेन्द्रके प्रतिमन्यगन	१०३-१०५
वैशामें प्रकीर्णात्र निल	१०३-२
" सर्वे निल	2-€0}
" सरयातयोजनके निल	१०३-१४
" श्रसम्यात योजनके विल	39-₹6
वायुरुमारोके भरन	१०३-३३
निवुत्कुमारीके भनन	१०३३०
वीर्यप्रपादके पद	१०३-६७
वेगुके व्यधिकृत भनन	१०३-३६
वेणुपारीके श्रामिकत मनन	१०३-४६
" तनुरचक	१०३-६६
वेणुरेवके तनुरस्क	१०३ ६०
शतारेन्द्रके प्रतिमन्यगन	१०३-१०७
शुक्र ेन्द्रके प्रतिमेन्यगन	१०३-१०६
स्तनित दुमारीके भवन	१०३-२६
°न्द्रके े गेन	१० <b>३</b> –१०२
4	³∘ <b>३</b> –≃३
-	ે શૂલ્સ–૧૦૦
	400

[ १२३	
सयोगी जिन	४०३-१०१
मर्ग प्रतीने प्रकीर्शक निस	१०३-६
" " सर्वे निल	१०३-१२
<ul> <li>" श्रसख्यात्त्योजनके विस्त</li> </ul>	१०३-२३
सरयातयोजन निस्तृत विल	१०३१३
संसारी जीवों की योनि	१०३ ⊏१
गुपर्णीक्रमार देवींके मवन	१०३ २६
सर्य प्रवृप्तिके पद	१०३ हर
स्वदृष्टिवादाधिकारके पद	१०३ ह ५
हरिकान्तक व्यविद्वतगरन	१०३-५०
" त <u>न</u> ुरस्क	१०३ ७३
हरिपेश इन्द्रके श्रधिकतभवम	१०३-४०
» » वतुरच्यः	१०३-६४
श्रमिवाहन इन्द्रकी सर्वसेना	१०४-२२
भग्निणिपि इन्द्रवी मर्नसेना	१०४-१३
श्रप्रमत्तगुर्यस्थानवर्ती जीव	६०४-५७
	६०८ त⊏
व्यमितगति इन्द्रकी सर्रसेना	१०४ १२
श्रमितबाहन इन्त्रकी सर्वसेना	१०४-२१
ध्याराशगता चुलिकामें पद	१०४ ४०
च्यात्मप्रवादमें पद	१०४ ४४

	[ 858 ]
ईंगानेन्द्र हे प्रतिमैन्यपट्	१०४-६४
उत्पाटपुवम पद	१०४ ४२
एमादश यहोम मर्गपट	१०४ ३३
क्रियाविशालम पद	१०४-५०
रर्मप्रवादम पद	१०४४६
वन्याणपादम पद	१०४४=
घोपर्री मर्रसेना	१०४-१०
चनवर्तीमा बंधुहुल	१०४ २४
» की गां <b>ये</b>	१०४२५
" " યાલી	१०४-२६
» ये ध्ररा	१०४-२७
» » उत्तमग्रीर	१०४२⊏
" " पदाति	
चमरेन्द्रशे सर्वसेना	१०४–२६
चतुर्दश प्रांम पर	<b>₹∘8</b> –8
चुलिकामामें सर्पद	४०८–३४
छेटोपस्थापना संयमी	१०४–३१
	१०४–४१
जलकान्त इन्द्रशी मर्वसेना	१०४–१=
जलगता चुलिकामे पद	१०४–३६
जलप्रभ की सर्वसेना	3-8-8
ताल	१०४-६६
	1-0-44

( 3.5, 1		
दशनंयत मनुष्य		940.05
धरणानद इन्द्रभी सर्व सेना		१०४५२
प्रमत्तगुमस्यानस्ती जीव		६०८ ६५
ग नायस्या जान		६०४-४४
##### ^ Ca		१०४-४६
प्रमानन इन्द्रज्ञी सर्वसेना		१०४ २३
श्राखनाटम पट		१०४-४६
परिवर्ममें पद		१०४ ३४
मुननाशियोंके भइन		१०४३
भ्वानंदमी सबसेना		•
मन पर्ययद्यानीचीव		१०४६
महायोष इन्द्रकी सर्गमेना		१०४-६१
मायागना चृत्तिशमें पद		१०४-१६
मिथ्यात्वम् सजगारवंघ		१०४३८
		१०४ १
रपगता चृतिकामें पद		३६-४०१
नशिए इन्द्ररी सर्वसेना		१०४ १७
वादित्र		१०४-६७
विद्यातुवार्द्में पद	~ ,	~ <b>१</b> ०४-४७
निपारुसूत्रमें पद	1 -	१०४-३२
वेखरी,सर्वसेना	•	
वेणुधारी इन्द्रकी सर्वसेना		१०४७
वेलम्य इन्द्रशी सर्वसेना	- 1	,१०४-१६
		१०४ १४

ृतीचननी समीना १०४ ४ म्यलगता चृतिनमी पद १०४ ४० मरयलगता चृतिनमी पद १०४ १० मरयलगता चृतिनमी पद १०४ १८ मरयलगता चृतिनमी पद १०४ १८ मन्यलगता चृतिनमी पद १०४ १८ मन्यलगतमीयमी जीव १०४ १६ मन्यलगत चिमी १०४ ३० मामायिक छेद्रोपस्थापना मंयमी १०४ ३० मामायिक स्वमी मामादनम यल्पतर वैधमीग १०४ २० सामादनम यल्पतर वैधमीग १०४ २० सीधा इन्द्रके प्रतिमैन्यगत १०४ १८ सिमार के मन्यलगत विभाग १०४ १९ दिलान इन्द्रकी मन्यलगत १०४ १९ दिलान इन्द्रकी मन्यलगत १०४ १९ दिलान विन्ताम पद १०४ १९ यापता मम्यन्यहि मनुष्य १०४ १९ मण्यलपदके वर्षे १०४ १८ मिन्यलपदके वर्षे १०४ १८			
भ्यत्मता चुलिरामें पद १०४ १७ भ्रम्यात्राता चुलिरामें पद १०४ १७ भ्रम्यात्राता चुलिरामें पद १०४ १७ भ्रम्यात्रात्रमें पद १०४ १० भ्रम्यात्रात्रमें पद १०४ १० भ्रम्यात्रात्रमें जीव १०४ १६ भ्रम्यात्रमें जीव १०४ १० १०४ १०४ १०४ १०४ १०४ १०४ १०४ १०४		1	१२६
स्थलगता चृलिहामें पद १०४ १७ भरत्यप्रवादमें पद १०४ १७ भर्य प्रवादमें पद १०४ १७ भर्य प्रवादमें पद १०४ ६० भर्य प्रवादमें पद १०४ ६० भर्य प्रवादमें जीव १०४ ६० भर्य प्रवादमें जीव १०४ ६० भर्य प्रवादमें जीव १०४ ६० भर्य प्रवादमें प्रवादमें प्रवादमें प्रवादमें पर्वादमें पर्वादमें १०४ २० भर्य प्रवादमें मामादानम् याज्यवत् वंधमंग १०४ २० १०४ १६ मामादानम् प्रवादमें प्रवादमें प्रवादमें प्रवादमें पर्वादमें परवादमें पर्वादमें परवादमें परवादमे	उत्तेचनदी सर्ववेदा		१००४
मत्यप्रवादमे पद १०४ १४ मर्ग प्रप्रमत्तर्मयमी जीव १०४ ६० सर्ग मयमी जीव १०४ ६० सर्ग मयमी जीव १०४ ६५ स्वा मयमी जीव १०४ ६५ सामायिक छेटोपस्थापना मंयमी १०४ ६२ सामायिक स्वर्मा १०४ ६२ सामादक्तम खल्पतर बंधमंग १०४ २० सामादक्तम खल्पतर बंधमंग १०४ २० सामादक्तम सामादक्तम व्याप्त १०४ ६६ हरिका हत्वस्त्री मत्रसेना १०४ १०४ १६ तिलाविक्तुसारम पद १०४ १६ तावात्रात्मे पट १०४ १६ स्वा (जीविक देवक हल) १०४ १६ स्व (जीविक देवक हल) १०४ १८ स्व स्वा (जीविक देवक हल)		-	एइ ४० १
मर्भ ध्यप्रमत्तमंयमी जीव १०४ ६० सर्ग स्वमी जीव १०४ ४६ स्व स्वमा जीव १०४ ६४ स्व स्वम् स्वम् १०४ ६४ स्व स्वम् स्वम् १०४ ६२ स्व स्वम् स्वमी १०४ ६० ६० स्व स्वमायिक स्वमी १०४ २० स्व स्वमायिक स्वमी १०४ २० स्व स्वम् स्वम् १०४ ५२ स्व स्वम् इन्द्रकी प्रतिमेन्यमञ्ज १०४ ६६ स्व स्वम् स्वमायिक स्वमीय १०४ २० स्व स्वम् स्वम् स्व स्व स्व स्व स्व स्व स्व स्व स्व स्		r	5°8 88
सर्ज मयमी जीन १०४ १६ गव ग्यर गव ग्यर गामाधिक छेट्रोपस्थापना मंयमी सामाधिक स्वर्ण १०४ २० सामाधिक सर्यमी सामादिक सर्वर्ण १०४ २० सामादनम श्रूच्य १०४ २० सामादनम श्रूच्य १०४ ५४ सामादनम श्रूच्य १०४ ६६ सिरान्न इन्द्रवी मरासेना सिरान्न इन्द्रवी मरासेना सिरान्न इन्द्रवी मरासेना सिरान्न इन्द्रवी मरासेना सिरान्न सन्प्रस्वा स्वर्ण वी मर्गेसेना सिनार्म पट श्रूच्यापन मस्यन्द्रवि मनुष्य स्वर्ण वीनोंके देढक इल) भूष्य प्रस्थानवर्षी मनुष्य सिश्रमुखस्थानवर्षी मनुष्य सिश्रमुखस्थानवर्षी मनुष्य स्वर्ण वीनोंके देढक इल)			१०४ ६०
नामाधिक छेद्रोपस्थापना मंथमी १०४ दे सामाधिक सथमी १०४ दे सामाधिक स्वर्ण १०४ प्रथ प्रथ सामाधिक स्वर्ण १०४ प्रथ सामाधिक स्वर्ण में स्वर्ण की मर्जेसेना १०४ दे सिमाधिक स्वर्ण में स्वर्ण की मर्जेसेना १०४ प्रथ सिमाधिक स्वर्ण में ए०४ प्रथ सिमाधिक स्वर्ण में १०४ प्रथ सिमाधिक स्वर्ण सिमाधिक स्वर्ण सिमाधिक स्वर्ण सिमाधिक स्वर्ण सिमाधिक सिमाधि			
सामायिक छेटोपस्थापना मंयमी सामायिक सयमी सामायिक सयमी सामायिक सयमी सामायिक स्थामी सामायिक स्थामी सामायिक स्थामी सामायिक स्थामी सामायिक स्थामी सामायिक स्थामी स्यामी स्थामी स्यामी स्थामी	<b>गव</b> ्म्यर	•	१०४ ६४
सामायिक सयमी शामादनम थन्पतर बंधमंग सामादनम थन्पतर बंधमंग सामादनमं भन्नुष्य  " " १०४ २४ सीधाई इन्नुके प्रतिमैन्यमञ्ज १०४ ६४ सिरान्न इन्नुकी मनसेना १०४ २० सिर्धा की मनसेना १०४ १९ निजार बिन्नुमाम यद १०४ ४६ नाप्रतान्म यह १०४ ४६ याम्यत मस्यादिक मनुष्य १०४ ३ स्मायत मस्यादिक १०४ ६ सण्याप्यदक्षे १५०४ ६ सण्याप्यदक्षे १५०४ ६			
सामादन वर्त प्रवस्त । सामादन वर्त महाप्य १०४-४२ १०४ ४४ १०४ ४४ १०४ ६६ १८४ १०४ ६६ १८४ १८४ १८४ १८४ १८४ १८४ १८४ १८४ १८४ १८४			•
* १०४ ४४ सीधर्भ इन्द्रके प्रतिमैन्यगाव १०४ ६६ हरिरान्न इन्द्रकी मयसेना १०४ १९ हिंग्सेय की मर्गसेना १०४ १९ निलारकिन्द्रनारम पद १०४ ४९ सापतानम पद १०४ ४९ समयन मम्यग्दिष्ट मसुप्य १०४ १ क्ला (बीगोंके देहक इस) १०४ १ मध्यमपदके वर्ष ११०४ ४९ निश्रमुक्ष्यानवर्धी मसुप्य १०४ ४	सामादनम थल्पतर बंधमंग		-
सीधः इद्रके प्रतिमैन्यगाज १०४ ६२ इरिरान्त इन्द्रकी भगरोना १०४ २० हरियेश की भगरोना १०४ १९ निलाहकिन्दुसारम पद १०४ ४९ जाततात्मे पढ १०४ ४२ यमयन मम्यग्द्रष्टि मनुष्य १०४ २ इल (जीरोंके देहक इन्छ) १०४ १ भण्यमपदके वर्ष १ १०४ ४	सामादननती मनुष्य		•
हरिरान्न इन्द्रभी भगरेना हरियो की भगरेना हरियो की भगरेना निवार विन्दुसारम पद जात्रशान्म पद स्मायन मस्याहिष्टि मनुष्य हल (बीरोंके देहक इन्छ) भण्यमपदके वर्षे भिज्यक्ष्यानवर्धी मनुष्य १०४४			*
हिरिषेश की मर्नेसेना १०४ १९ निलाहकिन्दुसारम पद १०४ ४९ जातत्रान्म पद १०४ ४९ समयन सम्याहिष्टि सनुष्य १०४ १ इल (बीरोंकि देहक इन्छ) १०४ १ सण्यसपदके वर्षे ११०४-२ निश्रमुक्षस्थानवर्धी सनुष्य १०४ ४	सीधर इद्रके प्रतिमैन्यगुज		
जिलात्र विन्दुसारम पद १०४ ४१ जा पतात्मे पढ १०४ ४३ यमयन सम्यादृष्टि सनुष्य १०४ ३ इल (जी में के देहक इन्छ) १०४ १ सण्यमपदके वर्ण १ १०५ २ मिश्रमुखस्थानवर्षी सनुष्य १ १०४ ४	इत्मिन इन्द्रकी मत्रसेना		
जाततान्मं पट १०४ ४ र यापान मध्यादृष्टि मनुष्य १०४ १ इन (जीतिके देहक इन्छ) १ ० ४ १ भण्यमपदके वर्ण १ १०५ २ मिश्रमुखस्थानवर्षी मनुष्य १ १०४ ४	होरपेश की मर्जसेना		
धमयन मस्यग्दष्टि मनुष्य १०४ र इल (त्रीनोंके देहक इस्त) १०४ १ भध्यमपदके वर्षे १ १०४-२ मित्रमुकस्थानवर्धी मनुष्य १ १०४ ४	त्रिलाङ्गिन्दुसारम् पद	٠,	•
हुल (तीरोंके देहक हुछ) - १०४ १ भण्यमपदके वर्ण 1 १०४-२ मिश्रमुखस्थानवर्धी महाय्य 1 १०४ ४		_	
भध्यमपदके वर्षे १ १०५-२ भिश्रगुष्दस्थानवर्ती मनुष्य १ १०५ ४	क्त क्षेत्रक ३		
मिश्रगुष्टस्थानवर्ती मनुष्य १०५४	प्यापालने दहते दुल्) प्रथमालने९	•	•
ु, भागनवा भनुष्य , १०५8	भिश्रमुद्धाः वस		-
# 0 m 11 U	,, राजानवता मनुष्य	,	•

1 550 ]	
घडागारम ब्राह्मपुरुष	د ډ ، ۲
भागपिगीम मागर	१०६ प्र
र गर्षियों में मागर	90€-8•
ज्दामागरम उदार पनय	१०६-
रत्यसानमे सागर	१०६ .
परश्विक इल	१०६-
पर्याप्तमन्तुच्य	१०७-१
	१०७ ४
पर्याम मनुष्योंमे मिध्यादृष्टि निथ्यादृष्टि मानुषी	१०७-२
मर्चनाराह मानुपा	१०७ ३
सर्वाधमिद्धितिमानरामीडव श्रीनरविष	१०७४
यजनापुर्धामे नारकी	१०८ ८८
भनुभए मनयोगी	१०= १२
"वचन योगी	१०८-१२७
यनुदिशवित्तयादि चारम देव	१०⊏-१३४
श्रपद्मायिङ	१०=-७०
भपर्यासपञ्चेन्द्रियतिर्पञ्च	<b>₹○□</b> □₹
यपर्वाप्तमञ्ज्ञ	<b>१</b> •⊏-४ १•⊏ ४.
श्ररिष्टा पृथ्वीमे नारकी	१०८ १३
थर रित्रानी	30 = 383 ******
	A 3 6 miles

	, •45 ]
श्चनिषदर्शना	ँ १०ट-१४३
द्यविरतसम्यग्दष्टि	१०=-४
श्रसत्यमनोपोगी	१०⊏-१२५
श्चानतप्राणतारखयु ग्रैवेयभवासी देव	१०⊏-६६
उपशमसम्यग्दिष्ट	१०८-१५१
उभयमनोयोगी	१०⊏-१२६
उपर (दूसरेसे उपर) के स्नर्गेत्री दे	वियोंमे मिथ्यात्व
रहित देनिया	१०⊏-४०
चतुरिन्द्रिय	१०= ७७
" पर्यं प्त	१०⊏ ७⊏
" ष्पपर्याप्त	30 =09
चढ्दर्शनी	१०=-१४४
" क्लमुखेन	१०८-१४५
" चेत्र गुप्तेन	१०⊏-१४६
ज्योतिष्क देव	१०⊏ ५६
बिर्यं ज्वोंमे सासादन मम्यग्दष्टि	३० = १६
" मिश्र	१०=-२०
" श्रानिरतसम्यग्दष्टि	१०=-२१
वीर्थं करके जन्मोत्मवपर सौधा स्वर्म्	सम्मिलित 'देव
	′ १०⊏-१४३
तेओलेश्या बाले जीउ	90-53.

fti i , लग । पुर्व ११⊏ ira 5 STS .. -4*0* 1:57 भेंद्रि मद्भारत स्टब्स् -¥~ : <del>1</del> 3¥-: । इक्टिन Į-2-3*}* **--३१** П - 32 - 33 - 40 j= ij स धाउनेन 1:213 स देखकें iri ib रहमात इव --68 F \$ = ¥ भा प्रवृत्ति राज्य सम्ब ११४० 1:21 र १६ मानुर रूपुर 🚉 ११२३ }:= {<sub>1</sub> न्य : १५ . 1 = 13 मीर द 😎 fez 15 ₽**=-19 पत्र** न्दिव = = ° बानहतेन 105.00 3-" देतह्वेन **₹≈** =३ = पञ्चेन्द्रिय पर्यान 82 20} क्षेत्रियोंने सामार्थ मन्द्राई १०८-८५ मिथ १०८ २५, १०६-२६ यसपत सम्बद्ध

	[130],
पञ्चेन्द्रिय मिथ्यादृष्टि तिर्यन्च	१०= ४१
» कालमुखेन	१०= ४२
" " च्रेत्रम्रुपेन	१०८ ४३
पद्मलेश्या वाले जीव	80=-88€
पु वेदी	१०८-१३८
प्रथ्वीकायिक	१०८-८६
गादर पृथ्वीकायिक	80= €0
<ul> <li>अलकायिक</li> </ul>	१०८ ६१
षादर श्राग्निकायिक	१०८ ६२
» वायुरायिक	१०= ६३
» धनस्पतिकायिकप्रत्येक	50 = €8
" अपर्याप्त पृथ्वीकायिक	8 c = E4
" <b>"</b> वापुकायिक	१०८ ६६
* ्* वनस्पतिप्रत्येक	१०८ ६७
बादर पर्याप्त प्रथ्वीकायिक	१०= ११०
" " <b>"</b> फालसुखेन	१०⊏-१११
" " " चेत्रमुखेन	१०= ११२
" " जलकायिक	१०≈ ११३
" वनस्पतिकायिक प्रत्ये	#]
" " श्रानिकायिक	१०८-११४
<ul> <li>भायुकायिक</li> </ul>	१०६ ११६

```
rati 1
  गटर पर्यप्त वायुरायिक कालमुखेन
                                       80=-884
                       चेत्रमुखेन
                                       १०८-११८
 मननासी देव
   0 K-20 8
        " कालमुखेन
  १०८-५५
        » चेत्रप्रयोन
   १०⊏-५६
भवनवामियोंने सासादन सम्यग्दृष्टि
   १०८-३१
           मिश्र
   १०८ ३२
           असयत सम्यग्द्रि
   १०⊏ ३३
            मिथ्यादृष्टि
   १०८-६०
मयरी पृथ्वीमे नारकी
   १०८-१४
मतिनानी
                                       १०८-१४०
मनोयोगी
                                       १०= १२३
भावती पृथ्वी (७ वें नरक) में नारवी
   १०८ १५
मिध्यादृष्टि नारकी
   60=-0
               बालप्रयोन
  2000
              चेत्रमुखेन
  30= €
मिध्यादृष्टि मनुष्य
   १०ट-४८
               बालमुखेन
   38 ⊒08
               चेत्रमुखेन
   $ 0 E - ¥ =
मिथ्यादृष्टि देव
   302-37
मेघा पृथ्वीमें नारकी
   90=-35
```

				[ १३२ ]
योनिमर्व	। पञ्चेन्द्र	य तिर्यञ्	वोंमे सासादन	१०८ २८ .
77	15	,	' मिश्र	39 =09
×		» আ	नेरत सम्यग्द(	ष्टे -१०⊏३०
योनिमर्ती	। पञ्चेन्द्रि	(य मि॰ या	दृष्टि	80=88
"	n	*	कालग्रुसेन	્ર ૧૦⊏-8ય
77	17	7	सेत्रमुखेन	१०= ४६
=यंतर दे	व			१० = ६१
20	कालमुर	ोन		१०= ६२
17	चेत्रमुखे	न		१०= ६३
ब्यंतरीम	सामादन	सम्यग्द्री	ģ	१०= ३४३
व्यंतरोंम	मिश्र			१०= 3 k
n S	पसयत स	म्यग्दप्टि		१०= ३६
» f	मेथ्याद्दरि	!		80 = 68
वचनयोग	पी			१०८ १३१
" ब्	<b>ालमु</b> रोन			१०८ १३२
" €	ोत्रमुखेन			१०८ १३३
	वीमे नार	की		१०=-१०
वायुकारि				32208
विकलत्र	य कालमु	रोन		<b>ξ</b> ο⊏ <b>=</b> 0
,	चेत्रम्	न		१०=-=१
निभंग इ				१०=-१३६

[ { { ! } } ]	
वेद्भ सम्यग्दर्षि	, - १०८-१५०
वैक्रियक रापयोगी	१०८ १३४
• गिथकाय योगी	१०८-१३६
थुत ज्ञानी	१०=-१४१
प्रक्ल लेश्यावाले जीव	१०८ १४८
स्त्री वेदी	१०८-१३७
सन्यमनोयोगी	१०⊏-१२४
सनत्तुमारसे सहस्त्रारतक के देव	<b>१</b> ०⊏-६=
सम्यग्निथ्यादृष्टि	१०⊏-३
संज्ञी जीव	१०=-१५२
सर्वनारकी	१०८-६
सासादन सम्पग्दष्टि	१०⊏२
स्≈म प्रव्योशियक	,5° ₹0=-&=
" जल <b>रा</b> पिक	33-208
<ul> <li>अग्निशियक</li> </ul>	१०८-१००
" वायुकायिक	१०६-१०१
" पर्याप्त पृथ्वीकापिक	१०८ १०३
" " ज्लकापिक	१०८ १०३
" र श्रीरनकायिक	१०८-१०४
" " वायुक्तायिक	१० <b>ट-१</b> ०४
् श्रवयीप्त पृथ्वीसायिक	१०८-१०६

	[ १३२
योनिमती पञ्चेन्द्रिय तिर्यञ्चोंमे सासादन	१०=-३
" " मिश्र	१०=-३
<ul> <li>" प्रतिरत सम्पग्दिष्ट</li> </ul>	80=-
योनिमती पञ्जेन्द्रिय मि॰ यादृष्टि	, go='
n n * कालमुखेन	\$0E-
» " <b>चेत्रप्र</b> सेन	80=-
व्यंतर देव	80€
<ul><li>वालमुखेन</li></ul>	१०=
* चेत्रमुखेन	१०्⊏
व्यंतरोंमं सासादन सम्यग्टिष्ट	805
व्यंतरोंमें मिश्र	for F
» श्रसयत सम्यग्दष्टि	१० '
" मि <i>य</i> गदृष्टि	80
वचनयोगी	१०८
" <b>फाल</b> मुखेन	30E ,
" चेत्रमुखेन	201 t
वंशा पृथ्वीमं नारकी	8 ‡
<b>बायुकायिक</b>	٤ ،
विक्लप्रय कालपृरोन	<b>१</b> ३
» चेत्रमुखेन	શે
विभंग ज्ञानी	و مړ
, ~	* ">

	[ १३६ ]
तिर्थञ्चमिथ्यादृष्टि	११०-७
नप्र'सक वेदी	११०-३⊏
निगोद जीव	११० २०
नील लेखा वाले जीन	११०-४१
गादर एकेन्द्रिय	११०-११
" " पर्याप्त	११८-१२
" " ध्यपर्याप्त	११०१३
" वनस्पति कायिक	११०-२१
" पर्याप्त वनस्पति कायिक	११०-२३
" श्रपर्याप्त वनम्पति रायिक	860-28
" निगोद	११० २७
" पर्याप्त निगोद	880-2€
" श्रपर्याप्त निगोद	११० ३०
मन्य जीव	११०-४३
मस्नी जीव	११० ४०
मायात्री नीत	् ११०-४ <b>१</b> ः
मिथ्यादृष्टि	११०-१
" वालमुरोन	११० २
" केत्रमुखे	११० ३
लोभी जीव	११०-४२
वनस्पति कायिक	880-8€

1 830 ] वनस्पतिकायिक व निगोदादि १४ प्राप्त मञ्चितरार्मा धकाययोगो 11:35 स्**रम**एकेन्द्रिय 111-13 पर्याप्त \$\$¢ }¥ ' श्चपर्याप 特权 वनस्पतिकायिक 110-12 पर्याप्त वनस्पति कायिक \*\* 17 15 22 ध्यपर्गाप्त " 110 57 **सुदम**निगोद 111 " पर्घाप्त निगोद 1 11 " श्रपर्याप्त " 11.11 चायिक सम्यग्दष्टि चीत्र its is







म्याजनार हरनेत जी सहजानन्दरशास्त्रम्

समस्थानसूत्रविपयदर्पग

हेलक — प्राज्यान्त्रिक सन्त, शुध्नमृति, चायतीर्थ पूज्य भी १०४ गुज़क

ष्ठी मनोहर जी 'महजान' द महाराज ' सम्प्रा'क —

सम्भाग्क — रत्तनलाल जैन पम० कॉम

मेरठ सदर प्रकाशक —

> मत्री, श्री सहजानन्द शास्त्रमाला १९११) योर निर्वाण स० २४८० [ ६० १६५

विव स॰ २०११ | योर निर्वाण स० २४२० [६० १६६४ | प्रदम संस्करण | प्रवृत्व || मूल्य || प्रवृत्व || मूल्य ||